॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

प्रभु! आपसे सुन्दर कौन हो सकता है? आपसे उत्तम वैज्ञानिक कौन हो सकता है जिसने इस जगत् को रचाया, जिसने इतने बड़े ब्रह्माण्ड का सर्वत्र जीवन मानव शरीर को बना दिया। पिण्ड को ब्रह्माण्ड बना दिया। कैसी सुन्दर विवेचना है, कैसी सुन्दर रचना है आपकी। मैं तो इसको किसी काल में भी नहीं जान पाता। मैं तो यही नहीं जान पाता कि प्रभु! मेरे एक क्षण समय में कितनी तरङ्गें उत्पन्न होती हैं, श्रोत्रों में कितने शब्दों की उद्बाधता होती है, भगवन्! मैं तो संसार में कुछ नहीं जानता। मुझे तो भगवन्! एक ऐसा मार्ग दीजिए जिससे इस संसार में मेरे द्वारा विडम्बना न आ पाये क्योंकि संसार में नाना प्रकार की सुन्दरियों पर जब मेरी प्रवृत्तियाँ चलती हैं तो क्या वह सुन्दरियाँ मेरे लिए सुन्दर बन सकती हैं? किसी काल में सुन्दर बन सकती हैं। मेरे अन्तःकरण में यह संस्कार जमते चले जाएँगे। वह जो आपने चित्त नाम का क्षेत्र बनाया है क्या उसमें भगवन्! मैं यह बीज बोता ही रहूँगा? यह मैं नहीं बोना चाहता। मैं तो यह चाहता हूँ कि यह जो बीज अङ्कुर मेरे द्वारा उत्पन्न होते रहते हैं प्रभु! इसका स्त्रोत ही नष्ट हो जाए और यह स्त्रोत उस काल में नष्ट होगा जब प्रभु! मैं आपको सर्वत्र में दृष्टिपात करूँगा और मौन हो जाऊँगा कि संसार में कुछ है ही नहीं। प्रभु! मैं तो उस काल में उत्तम बन सकता हूँ, उससे द्वितीय मेरे लिए कोई मार्ग है ही नहीं।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 585 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 660
वर्ष : 50 44 समग्र वर्ष : 56

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. मानवीय दर्शन	पूज्यपाद-गुरुदेव	5-23
4. आर्यावर्त्त	पूज्यपाद-गुरुदेव एवं महर्षि महानन्द जी महाराज	24-37
5. ऋषियों के उद्‌गार		38
6. दान, पुस्तकों की सूची व पुस्तक प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		39-42

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेद मन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को निरन्तर प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है–

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.) PAN No. – AAAAV7866J
पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली
बैंक खाता नं. 0149000100229389, IFS Code - PUNB 0014900

शृङ्गीऋषि वेबसाईट

Website : www.shringirishi.in
Email : contact@shringirishi.in

आप सभी को होली की हार्दिक शुभकामनाएँ।

॥ ओ३म् ॥

मानवीय दर्शन

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेद मन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेद मन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेद वाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेद वाणी में उस महामना देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि प्रत्येक वेद मन्त्र अपने में गान गाने वाला है। क्योंकि वह गान गाने वाला तो प्रायः गाता ही रहता है। प्रत्येक वेद मन्त्र उसका गुणगान गाता ही रहता है, मानो वो एक ऐसा अनुपम देव है उसे वेद बेटा! महादेव के नाम से पुकारने लगता है। **जो देवों का देव कहलाता है, वो महादेव कहलाता है।** इसलिये हम उस परमपिता परमात्मा की आराधना अथवा उसकी महती का वर्णन और महती के आङ्गन में प्रवेश होना ही एक अभ्युदय ब्राहाः तो हम उसकी महती को सदैव जानने वाले बनें। प्रत्येक मानव का अन्तर्हृदय और उसकी ये मनोनीत धारणा है वो अपने में मानो देखो, अपनेपन को ही दृष्टिपात नहीं करना चाहता है।

मृत्युञ्जय बनने की प्रेरणा

प्रत्येक मानव का परम्परागतों से बेटा! एक मन्तव्य रहा है, एक विचार रहा है कि हम सब प्राणीमात्र मानो देखो, मृत्युञ्जय बन जायें। मृत्युञ्जय बनने की एक आकांक्षा बनी रहती है, और मानव ये कहता है कि मैं मृत्युञ्जय बन जाऊँ। मेरी प्यारी! माता के द्वार से जब पुत्र का विच्छेद होता है तो रुदन, वे अपने में रुदन करने लगती है और मानो देखो, ये चाहती है कि मैं मृत्यु को प्राप्त न हो जाऊँ। तो प्रत्येक प्राणीमात्र

का एक मन्तव्य रहा है। जब हम उस मन्तव्य के ऊपर चिन्तन और मनन करना प्रारम्भ करते हैं, तो कुछ ऐसा प्रतीत होता है, क्या हम अपने में इतना गम्भीर अध्ययन जिससे हमारी मृत्यु न आ जाये। मेरे प्यारे! देखो मृत्युञ्जय बनने के लिए प्रत्येक मेरी प्यारी मातायें, प्रत्येक मानव के अन्तर्हृदय में ये विचार बारम्बार उत्पन्न आते रहते हैं क्या मैं मृत्युञ्जय बन जाऊँ, मृत्यु मेरे समीप न आये। एक यज्ञशाला में यजमान विद्यमान है, उससे जब यह प्रश्न किया जाता है ये तू क्या कर रहा है तो उत्तर प्राप्त होता है कि मैं मृत्युञ्जय बनना चाहता हूँ। मैं अपने को मृत्यु में नहीं ले जाना चाहता हूँ। वह मृत्युञ्जय बनने की अपनी घोषणा कर रहा है। तो मेरे पुत्रो! विचार-विनिमय क्या कि आज हमें मृत्युञ्जय बनना है जिससे हमारे समीप मानो देखो, मृत्यु ब्रह्म वाचो प्रवाहा लोकाम् हे मृत्यु! तू संसार को रुला देती है। हे मृत्यु! तू मानो देखो, विच्छेद करा देती है। तो मेरे पुत्रो! देखो विचार आता रहता है क्या वास्तव में जब हम ये विचारते हैं कि मृत्युञ्जय बनने की प्रेरणा तो प्राप्त हो गई है, वेद मन्त्र भी यही कहता है और जो रसों का स्वादन बना करके अपने में, अपने को शान्त हो करके वो ये दृष्टिपात करता है तो मेरे प्यारे! देखो उसकी एक महानता का प्रायः हमें दर्शन होता है, जिस दर्शन के लिए प्रत्येक मानव परम्परागतों से बेटा! अन्वेषण और चिन्तन करता रहा है। परन्तु वेद का मन्त्र कुछ कहता है। वेद का मन्त्र कहता है, हे मानव! तू मृत्युञ्जय बन। मानो देखो, तू "मृत्युञ्जयं ब्रह्म वारो ब्रवेः वृतम लोकाः" वेद मन्त्र कहता है, हे मानव! तू मृत्युञ्जय बनने के लिए तत्पर हो, क्योंकि मृत्युञ्जय बनना ही तेरा कर्त्तव्य माना गया है। तो मेरे प्यारे! देखो प्रत्येक मानव यज्ञशाला में विद्यमान हो करके यजमान कहता है, मैं मृत्यु को प्राप्त न हो जाऊँ, मैं मृत्युञ्जय बनूँ। प्रत्येक मानव की ये आकांक्षा बनी रहती है कि मैं मृत्युञ्जय बन जाऊँ। मेरे प्यारे! देखो मानव के हृदय में ये आकांक्षा कोई नवीन नहीं है। ये प्रारम्भ से, सृष्टि के प्रारम्भ से चली आ रही है।

मृत्युञ्जय बनने का स्त्रोत

आओ मेरे पुत्रो! आज हम मृत्युञ्जय कैसे बनेंगे, मृत्युञ्जय की कल्पना तो आती रहती है, विचार आते रहते हैं, परन्तु विचार ये आता है कि मृत्युञ्जय बनते कैसे हैं? जिसमें हमारी मृत्यु ना आये वो कौन-सा यन्त्र है, जिसमें विद्यमान हो करके हम मानो देखो, इससे पार हो जायें और अपने हम आनन्दमयी अपने को इतना प्रोत्साहित न कर पायें जिससे हमारा जीवन उसी मोह, मोह के रूप में बेटा! हम स्वतः उस आभा में निहित हो जायें, और वह मानो देखो, मृत्यु भूसम्भवाः। मेरे प्यारे! देखो जब ये विचार आता है तो हमें यहाँ वेद का मन्त्र कुछ कहता है। **वेद का मन्त्र ये कहता है, हे मानव! तू अपनी अन्तरात्मा को जानने का प्रयास कर।** ये जो तेरे द्वारा जो अन्तरात्मा है जिससे शरीर अपनी क्रियाओं में रत्त हो रहा है, अथवा क्रियाशील बना हुआ है, उसको हमें जानना है, उसके आङ्गन में प्रवेश करना है। **हे मृत्युञ्जयं! ब्रह्म लोकाम् देवाः – वेद का वाक्य यही कहता है कि हम अन्तरात्मा को जानने वाले बनें।** मेरे प्यारे! देखो हम नाना ऋषिवर विद्यमान हो करके ये प्रसङ्ग उत्पन्न होते रहे हैं। क्या ये मृत्यु क्या है जो इतना मानव इससे दुःखित हो रहा है। तो मेरे प्यारे! इसमें तो आज का विशेष तो सिद्ध में प्रतीत नहीं होती है, परन्तु यही है कि हम मृत्युञ्जयं ब्रह्म लोकाम् वाचन्नमं ब्रह्मे व्रताः हे मानव! हम सब मृत्युञ्जय बनने के लिए उस वेद की आभा को अपनाने वाले बनें। वेद क्या कहता है। **वेद यही कहता है क्या हे मानव! तू अपने जीवन को आदर्शवादी बना करके और इस सागर से पार हो।**

मेरे प्यारे! हमारे यहाँ परम्परागतों से ही नाना प्रकार का अन्वेषण होता रहा है। नाना प्रकार की विचारधारायें मानव के समीप आती रही हैं। इसके ऊपर बेटा! मानव परम्परागतों से अन्वेषण अथवा अनुसन्धान करता रहा है। आज मैं तुम्हें उस अनुसन्धान के क्षेत्र में तो ले जाना नहीं चाहता हूँ। परन्तु विचार केवल ये कि हमारा वेद क्या कहता है और उपवेद क्या

कह रहा है, इसलिये **मानव को अपने जीवन को सक्रिय बना करके और जीवन की एक अनुपम धारा को अपनाना है।** इसको अपनाने के पश्चात् मानव के जीवन में एक महानता का प्रायः दर्शन हो जाये, वह सुखद का अनुभव करने लगे।

मेरे पुत्रो! देखो आज मैं तुम्हें मृत्युञ्जय बनने के लिए तो नहीं, कुछ विचार देने के लिए आया हूँ और वे विचार ये हैं कि मानव को कितना सुदृढ़ बनना है। और मानव को जैसे मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे इससे पूर्व काल में बहुत से मानो देखो, मिलन और सुगठितता की मैंने अपनी चर्चायें की हैं। मैं उन चर्चाओं को धारण करके मेरा अन्तरात्मा बड़ा प्रसन्न रहता है। क्या एक मानव अपने जीवन की आचार संहिता का निर्माण कर रहा है। आचार संहिता को बना रहा है। तो वही आचार संहिता मेरे प्यारे! महान् और पवित्र बन करके हम परमपिता परमात्मा के आनन्दमयी स्त्रोत को जानने वाले बनें।

शिव की विवेचना

आज का हमारा वेद मन्त्र यहाँ ये कहता है, आज का वेद का मन्त्र कहता है–हे परमात्मन्! तुझे वेद मानो देखो, शिव की उपाधि प्रदान कर रहा है। हे शिवम् ब्रह्मः! हे शिव! तू महादेव है क्योंकि तू देवों का देव कहलाता है। मानो देखो, तू देवों का देव है, कल्याण करने वाला है, परन्तु देवाम् ब्रह्म लोकाम् ब्रह्मे वाचा सम्भवाः। मेरे प्यारे! देखो वह देवों का देव है जो हमारे यहाँ दो प्रकार की धाराओं में परम्परागतों से बेटा! देखो महा शिव का वर्णन होता रहा है। एक शिव वह कहलाता है जो मानो देखो, सर्वज्ञ है, द्वितीय शिव वह कहलाता है जो मेरे प्यारे! देखो कुछ मानव अपनी धाराओं को ले करके मनों की पूर्ति करना चाहता है। मेरे प्यारे! देखो एक वह अपने में प्रतिभासित हो रहा है। हे महा, देवों के देव तू मानो देखो, देवताओं का अधिपति है। तू मानो देवताओं का धिराज क्या मानो ब्रह्मे वाचो देव व्रताः। मेरे प्यारे! देखो शिव नाम परमात्मा का है, शिव नाम आत्मा का है, शिव

नाम मानो देखो, बाह्य जगत में शिव एक मानो देखो, अपनी व्यापकता में परणित हो रहा है। तो आओ मेरे प्यारे! ये शिव जो हिमालयं ब्रह्म वो सम्भवाः मानो देखो, इसे हम धिराज के नामों से वर्णन करते रहे हैं, 'माणं ब्रह्मः लोकाम्' हम बेटा! देखो शिव को अपनाने वाले बनें। ये शिव के लिए परम्परागतों से मानव अपने में कुछ अनुसन्धान, अपने तुम्हें कुछ विचार-विनिमय कर रहा है। और वे विचार क्या है, हम ये चाहते हैं कि वो जो शिव है, जो कल्याणकारी है, हमारे में मानो देखो, कल्याण को जो भरण करने वाला है उसी महादेव को अपना करके हम इस सागर से मानो देखो, पार होने का प्रयास करें। परन्तु आज का हमारा वेद मन्त्र, ये क्या कह रहा है, वेद मन्त्र कहता है–हे मानव! तू अपने को महान् बना करके ही, तेजस्वी बना करके तेरे जीवन की एक महान् प्रतिभा का जन्म हो जायेगा। जिस प्रतिभा को तुम अपने से दूरी कर पाये हो, वह अग्नि मानो वही प्राः प्रहे वह प्रहरी तेरे समीप आ जाये, तो मानो देखो, लोक और परलोक, दोनों कल्याण के मार्ग के पथिक बन जायें।

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना तो तुम्हें देने नहीं आया हूँ, विचार ये देने के लिए आया हूँ कि आत्मा का नामोकरण भी विष्णु कहलाता है। हे अब्रतम् ब्रह्मा! हे आत्मा! तू विष्णु है, हे आत्मा! आत्मा तू शिव है, तू कल्याण करने वाली है, मानो तेरी आभा में कल्याण ब्रह्मः वायु सम्भवं लोकाम् वर्चस्व प्रवे लोकाम्। मेरे प्यारे! देखो हम उस परमपिता परमात्मा की महती का वर्णन करते हुये, अपने में महानता का मानो देखो, प्रायः दर्शन करते रहें।

मानव दर्शन

प्रत्येक मानव बेटा! परम्परागतों से मानव दर्शन के लिए पुकारता रहता है कि मैं मानव दर्शन में रत्त हो जाऊँ। तो बेटा! मानव दर्शन किसे कहते हैं। मानव दर्शन वेत्ता ये कहता है कि जो मेरा मानो देखो, ये क्रियाकलाप हो रहा है, इस क्रिया को अन्तिम छोर देना, अन्तिम मानो देखो,

व्यवहार में अपने अन्तिम रूप देने का अभिप्रायः केवल ये कि हम मानो देखो, अपने में मानवीय दर्शन, मानवीय आभा और विचित्र आभा को अपना करके इस सागर से पार होना है। तो मेरे प्यारे! देखो ये मानव के हृदय की एक आकांक्षा कहती है, हृदयङ्गम हो करके अपने में एक विचार दे रहा है और वह विचार मुनिवरो! देखो, वह प्रायः ब्रह्मणा ब्रहे सम्भवाः, वह विचार अपने में अनूठा बन करके रहता है। तो आओ मेरे पुत्रो! देखो विचार क्या आज मैं तुम्हें ऐसे क्षेत्र में ले जाना चाहता हूँ। मेरे प्यारे! महानन्द जी ने मुझे इससे पूर्व काल में मानो देखो, ये चर्चायें प्रकट करते हुये कहा था। उन्होंने कहा था कि संसार में मानो प्रीति होनी चाहिये, विघटता नहीं होनी चाहिये, महानता होनी चाहिये और पवित्र बन करके ही देखो हम कुछ क्रियाकलापों में रत्त हो सकते हैं। तो मेरे प्यारे! देखो ऐसा जब उन्होंने अपने विचाराम् ब्रह्म वासो सम्भवाः लोकाम्, मेरे प्यारे! देखो जब ये विचारने लगता है मानव, क्या अपने में महान् दर्शनम् ब्रह्मे, वाचक प्रवाहः लोकम् यजनम् ब्राहा। मेरे प्यारे! देखो यही तो मानवीय दर्शन कहलाता है जिसमें मानव अपनेपन को विचारता रहता है, अपनी आभा को संयम में लाना प्रारम्भ करता है, तो मानो, वे लोकों की यात्रा में, लोकों की आभा में जाना चाहते हैं। विचित्रता में जाना चाहते हैं, जिससे उसके मानवीय, ताकि मानो देखो, रक्षार्थ मानवीयता का मानवीयत्व उसके मानव दर्शन के रूप में वो परिवर्तित हो जाये। मेरे प्यारे! वो ही तो मानव का अनूठा जीवन है, जिस जीवन को ले करके मानव अपनी मानवीयता का दर्शन करता रहता है।

आत्मज्ञान

आओ मेरे प्यारे! मैं विशेष विवेचना तो तुम्हें देने नहीं आया हूँ, वेद का मन्त्र कहता है आत्मब्रह्मे, उस आत्मा का नाम मानो देखो, शिव के रूप में वर्णन किया गया है। हे नमत्वाम् ब्रह्म लोकाम् आत्माः। मेरे प्यारे! देखो वही तो आत्मा मानो देखो, घृत कहलाया जिसके कारण हमारा शरीर एक

चेतनित बना रहता है, हम चेतना में रत्त होते रहते हैं। तो आओ मेरे पुत्रो! देखो आज हम उस परमपिता परमात्मा की महती को विचारते चले जायें, परमात्मा का जो अनूठा ज्ञान है, अनूठा विज्ञान है, उस आत्मज्ञान को पाने के लिए हम सदैव अपनी आभा में निहित रहते हैं।

भगवान् कृष्ण की महानता की ज्योति का दर्शन

मेरे प्यारे! विचार, क्या आज हम, विचार ये कि मेरे प्यारे महानन्द जी ने ये वर्णन किया भगवान् कृष्ण की कुछ चर्चायें कीं और भगवान् कृष्ण की ये चर्चायें कीं क्या उन्होंने मानो देखो, कालिदह में जा करके नाग का मन्थन किया और नाग को मानो देखो, मन्थन करके लाये गये। मनगणम ब्रह्मे वरणसुताः ऐसा मुझे महानन्द जी ने वर्णन कराया। परन्तु जब उन्होंने विखट की चर्चायें कीं, वास्तविक स्वरूप का वर्णन किया, क्या वो जो कालिदह में रहने वाला सर्पराज है, वो संसार को मिलने के लिए तत्पर हो रहा है। परन्तु देखो उसी को भगवान् कृष्ण ने मानो देखो, उसकी कृतियों को समाप्त किया। तो प्रायः ऐसा नहीं है जैसा महानन्द जी ने वर्णन किया है। मेरे विचार में तो ये आता है, क्या ये समाज की मानवीयता उस समय ऊँचे शिखर पर विद्यमान थी। परन्तु देखो उसी के कारण ये मानव ने अपनी कल्पनायें की हैं। क्या वह छिन्गं ब्रह्मः लोकम् विषद् वाहा–ये विषधर है, ये मानव का भक्षण कर जाता है, मानो ये तो यथार्थ है, उसमें दो युक्तियाँ नहीं, परन्तु देखो विचारना इसमें ये है क्या वह उन्होंने सामाजिक तथ्यों को कितना महान् बनाया है। पातालपुरी की चर्चायें मेरे प्यारे महानन्द जी ने की। मैंने ये चर्चायें कई कालों में की हैं, क्या जिस समय पातालपुरी के मङ्गलम् ब्रहे वासम् बव्हा राजा रावण के पुत्र नरान्तक वहाँ का राज्य, राज करते रहते थे। परन्तु जब राज करते रहते तो सम्भव प्रवाहा लोकाम् वहाँ एक अनूठी एक क्रान्ति उत्पन्न हुई थी उस काल में। पातालपुरी में एक क्रान्ति उत्पन्न हुई और क्रान्ति इतनी विशाल मानो एक प्राणी-प्राणी रक्त का पिपासी बन गया। संस्कृति का ह्रास हो गया। संस्कृति के ह्रास के

कारण मानो देखो, नाग, नाग जाति यहाँ पातालपुरी से आई और पातालपुरी से आ करके देखो भगवान् राम ने, **भगवान् राम के समय में भी आई और कृष्ण के समय में भी आई।** परन्तु देखो भगवान् कृष्ण ने उन नाग जाति को अपने में मानो देखो, उसको विलय कर लिया। अपने में उसे, अपने समाज में उसका विलय हो गया। विलय होने का परिणाम ये हुआ कि ये समाज एक सूत्र में परणित हो गया। **एक सूत्र में जब ही परणित होता है जबकि मानव अपने में ये जान लेता है कि मुझे दोषारोप नहीं करना है, मुझे क्रोध की मात्रा नहीं लानी है, मानो देखो, मुझे तो अपने उद्देश्य को पूर्ण करना है।** तो मुझे कुछ ऐसा स्मरण है पुत्रो! क्या मुनिवरो! देखो, वह उनको लाया गया सम्भव ब्रहे कोसम ब्रह्माः। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कुछ असभ्य व्यवहार तो प्रायः होता ही रहता है परन्तु देखो भगवान् कृष्ण ने उनको जान करके, जानकारी ला करके और वे नित-प्रति मानो अपने यन्त्रों में श्रवण करते रहते थे क्या उन्होंने ऐसा नृत्य किया है, अमुक प्राणी ने ऐसा नृत्य किया है परन्तु हम नृत्यतिकाओं में जाना नहीं चाहते हैं। विचार केवल ये क्या वो नाग जाति, नाग आवभ्रहे, वो पातालपुरी से आई और मानो देखो, उन्होंने अपने में विलय कर दिया। अपने में सजातीय बनाया। तो इसलिये मानव को चाहिये क्या अपने जीवन में महान् बनाने के लिए उस आभा को लाने का प्रयास किया जाये जिससे हमारे जीवन में एक महानता की ज्योति का दर्शन हो जाये, जिससे महानता की प्रतिभा का जन्म हो जाये। तो मानो देखो, वे नाग अपने में सम्मिलित हो गये। ये सर्पराज नाग नहीं था, ये प्रजा एक नाग जाति आई पातालपुरी से। आधुनिक काल में भी इसका नामोकरण कुछ और उच्चारण किया जाता है। परन्तु देखो वे आई और भगवान् कृष्ण ने उसे अपने में सम्मिलित करने का प्रयास किया और **उन्होंने ये कहा कि ये तो हमारा कर्त्तव्य है, ये तो हमारी प्रतिभा कहलाती है,** उसी के आधार पर अपने जीवन को कहाँ और कितना महान् बनाना है। तो मेरे प्यारे! देखो इसके ऊपर विचार-विनिमय करना है कि हम समाज में एक मानवता को लाने का

प्रयास करें। जिससे समाज में सुखदः आनन्द की स्थापना हो जाये। मेरे प्यारे! देखो इसी प्रकार हमें विचारना है।

मुझे महानन्द जी ने ये प्रकट करते हुये कहा क्या कृष्ण इत्यादियों ने नाग को अपने में धारण किया और अपना करके मानो समाज को सुचारु रूप से चलाना, ये राष्ट्रवाद का कर्त्तव्य कहलाता है। तो मेरे प्यारे! देखो मुझे कुछ ऐसा स्मरण आता रहता है, मैंने इससे पूर्व काल में भी ये वाक्य प्रकट किये हैं। मानो देखो, उन्होंने भगवान् कृष्ण का पचीस वर्ष और पाँच दिवस की आयु में मानो देखो, उन्होंने ये अपने में मिलाने का समाज का क्रियाकलाप किया। वे क्रियाकलापों में रत्त रहे हैं, मानो देखो, उन्हें क्रियाओं के जानने के लिए मानव अपने में मानवीयता को जानता रहा है और विचारता रहा है कि हम मानो देखो, इस प्रकार की राष्ट्रीय प्रणाली हमारी होनी चाहिये, इस प्रकार के नियम होने चाहिये जिससे उनमें एक प्रीति की भावनायें मानो देखो, हृदय में ओत-प्रोत हो जायें जिससे हमारा हृदय सत्य और पवित्रता की वेदी पर निहित होता रहे।

मेरे प्यारे! देखो मुझे कुछ ऐसा स्मरण है क्या उन्होंने बेटा! ऐसा ही किया अहा! सत्यप्रते लोकाम्। मुनिवरो! देखो, जहाँ, जहाँ ये विचार आता है क्या नाग जाति ने अपने विराट रूप को धारण किया तो मानो ये विचार शोभनीय नहीं है। इन विचारों में मानो देखो, कोई अङ्कुरिता नहीं है। तो विचारना ये है क्या आज हम मुनिवरो! देखो, अपने जीवन को जहाँ आध्यात्मिकवाद, याग इत्यादियों की विवेचनायें प्रायः हम करते रहते हैं, वहाँ मानो एक ये भी वाक्य आता है, वहाँ ये भी विचारधारा आती रहती है। तो मेरे प्यारे! देखो उन विचारों को ले करके हम राष्ट्र, समाज को ऊँचा बनाने के लिए प्रयास करें।

महाराजा शिव द्वारा देवपूजा की विवेचना

देखो, यही विद्वता की चर्चायें जब मुझे महाराजा शिव का जीवन स्मरण आता रहता है। हमारे यहाँ शिव के नाना प्रकार के पर्यायवाची शब्द

माने जाते हैं। शिव नाम राजा का है, शिव नाम परमपिता परमात्मा का है। उनको देखो ये नाना प्रकार के शिवों की चर्चायें जब प्रायः प्रारम्भिक हो जाती हैं, तो बेटा! विचार आता है कि पर्यायवाची शब्दों में शिवम् ब्रह्म वाचो देवाः। मेरे प्यारे! देखो, हिमालय में जो विश्राम करने वाला हो वो राष्ट्र का पालन कर रहा है। महाराजा शिव मानो देखो, हिमालय की आभा में निहित रहते हैं। और उस मानो देखो, वहीं अपनी क्रियाओं में रत्त रह करके क्योंकि मानव का परम्परा का जो एक क्रियाकलाप है, वो अद्वितीय माना गया है। महाराजा शिव और माता पार्वती मानो प्रातःकालीन याग करते रहते थे। प्रातःकालीन याग करना, उसके पश्चात् उन क्रियाओं से निवृत्त हो करके अपने-अपने में वह असुतम् होता रहा है। तो मेरे पुत्रो! विचार-विनिमय क्या, महाराजा शिव और पार्वती दोनों मुनिवरो! देखो, राष्ट्र का पालन करते रहते थे। **राष्ट्रवाद में निहित रहना भी ये मानवीयता का एक कर्त्तव्य कहलाया गया है।** जिस कर्त्तव्यवाद की वेदी को अपना करके मानव उसके पूर्णरूपेण उन क्रियाकलापों में रत्त रहता है, वो ही बेटा! देखो इस संसार में महान् और पवित्र बन जाता है।

विचार-विनिमय क्या मुनिवरो! देखो, महाराजा शिव-पार्वती प्रातः कालीन बेटा! ब्रह्म याग में परणित हो करके वे देवपूजा में लग जाते थे। तो उन्होंने कहा, एक समय पार्वती बोली कि महाराज ये देवपूजा क्या है? महाराजा शिव बोले कि देवताओं का पूजन करना है। देवता कौन हैं, मानो देखो, **देवता वो कहलाते हैं, जो देते हैं।** वे देवता हैं और जो देते हैं उनकी पूजा करनी है। मानो देखो, उसी की पूजा का अभिप्राय मैंने तुम्हें बहुत पुरातन काल में वर्णन कराया। पूजा का अभिप्राय ये है कि यथोचित जो मानो देखो, जिसको जैसी वस्तु है उसी प्रकार स्वीकार करके उसका पूजन करता है, वही तो एक महानता की वेदी कहलाती है। मेरे प्यारे! प्रातःकालीन वे विवेचना करते रहते थे और वर्णन करते रहते थे क्या हम अपने में प्राणम् ब्रहे सम्भवाः लोकाम् मानो देखो, हम अपने क्रियाकलापों में रत्त प्रातःकालीन याग करना, ब्रह्म याग में परणित होना, मानो शिव ये कहते थे क्या देवपूजा उसे ही कहते

हैं जो देवताओं का विधान कहलाता है। मानो जैसे वायु वेग में गति कर रहा है, वो गति प्राणम् ब्रह्म वाचो देवाः वे एक प्राण की सत्ता को ले करके मानो गमन करता है। यदि प्राण-सत्ता वायु में नहीं, गति न होगी तो वायु का अपना कोई महत्त्व नहीं है। वे परमाणुओं को ले करके अन्तरिक्ष में मानो ओत-प्रोत करा देती है। जब वे परमाणु अन्तरिक्ष में चले जाते हैं, उन परमाणुओं की दो प्रकार की गतियाँ होती हैं, एक मानो वो परमाणु वायुमण्डल में छायमान हो जाते हैं, एक वही शब्द के जो परमाणु हैं, शब्द के जो अनुग्रह रूप हैं उन्हें अन्तरिक्ष में भरण करा देती है। मेरे प्यारे! देखो वही शब्द बन करके, वही आकार बन करके अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत होता रहा है।

मुझे स्मरण आता रहता है, महाराजा शिव और माता पार्वती जब अनुसन्धान करते थे अथवा दोनों अपनी विज्ञानशाला में विराजमान हो करके बेटा! देखो वे विचार करते रहते थे और विचारों में अपने में एक महानता की प्रतिभा का प्रायः दर्शन होता रहता। एक समय बोली कि महाराज एक वेद मन्त्र मुझे स्मरण आ रहा है, और वो वेद मन्त्र ये कहता है सम्भवं ब्रह्म लोकाम् वाचप्रविः लोहः पर्वतियाः। वह बोली कि महाराज वेद का मन्त्र ये कहता है कि देवपूजा उसे कहते हैं जो देवताओं की आराधना करता है। देवताओं की आराधना करना ही हमारा एक कर्त्तव्य माना गया है। परन्तु जिस आभा को ले करके प्रत्येक मानव परम्परागतों से ही अपने में विचित्र आभा में निहित रहा है। तो मेरे प्यारे! उन्होंने कहा कि ये, ये जो आकार बन करके अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत होता है वे आकार मानो देखो, 'भूर्भुवः स्वः' लोकों में रमण करता रहता है। और वही एक अभ्युदय हो करके वही मानो देखो, अन्तरिक्ष में मानो देखो, ओत-प्रोत हो करके वो आकार बन करके रहता है। जैसे मानव का शब्द है, शब्द मानो देखो, एक आकार रूप में परणित रहता है। वो ही आकार रूप को धारण करता हुआ मानो देखो, अपने में सजातीय बनाता रहता है। जिस आभा में, मानो अपने में, मानो पवित्रता की वेदी को अपनाता हुआ और मङ्गलम् ब्रह्मे वाचप्रव्हा उस शब्द को देवी हम किसी भी काल में आकार रूपों में दृष्टिपात कर सकते हैं।

उन्होंने कहा हे भगवन्! ये वेद का मन्त्र तो ये नहीं कह रहा है। उन्होंने कहा ये वेद मन्त्र क्या कहता है, उन्होंने कहा ये वेद मन्त्र तो ये कहता है क्या वायु सम्भव प्रवा वृति लोकाम्। मानो देखो, ये जो वायु है ये अपने में गति देने वाली है, गतिशील मानो इसमें प्राण रहता है। उन्होंने कहा देवी ये प्राण नहीं मानो प्राण-सत्ता है, जो प्राण-सत्ता मानो देखो, अग्नि के, अग्नि को भी उद्बुद्ध करने वाली है और अग्नि को उद्बुद्ध करके वही मानो देखो, आकृतियाँ बन करके वह अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत हो जाती हैं। उन्होंने कहा प्रभु! ये तो मैंने स्वीकार बहुत पुरातन काल में ही किया था परन्तु मेरा तो आशय ये है कि जैसे प्रातःकालीन हम देवपूजा करते हैं और देवपूजा में हम रत्त हो जाते हैं तो वो देवपूजा मानो देखो, हमारे लिए बड़ी सार्थक बन करके मानो देवत्त्व को प्राप्त होती रहती है। ये वेद का वाक्य कहता है आप उसके विपरीत मुझे उत्तर दे रहे हैं। उन्होंने कहा देवी तुम्हारी जानने में मानो सूक्ष्मता है, दोनों का एक ही स्वरूप बनता है, दोनों की एक ही धारा बनती है जो धारा अन्तरिक्ष में प्रायः ओत-प्रोत हो जाती है। मानो देखो, जैसे इसी के आधार पर देखो भौतिक विज्ञानवेत्ता अपने में शब्द को आकारित करके उनका दर्शन करते हैं। ऐसा मुझे स्मरण आता रहा है, जैसा मैंने तुम्हें कई काल में वर्णन कराया है कि हमारे जो पुत्र उभाः, मानो देखो, जो समुद्र के तटों पर विद्यमान हो करके मानो देखो, याग करते हैं, उसके ऊपर अन्वेषण करते हैं, विज्ञान को साकार रूप देते हैं। और विज्ञान का साकार रूप दे करके ये सिद्ध करते हैं क्या प्रत्येक शब्द हमारा आकारित बन करके, अङ्कुरित हो करके वह मानव की मानवीयता में परणित हो जाता है। ये विज्ञान के वाङ्मय में प्रवेश होता हुआ मानो वही शब्दों का आकार बन करके नाना प्रकार की चित्रावलियों में परणित रहता है।

आओ मेरे पुत्रो! मैं ग्रहे वाच्प्रवः लोकाम् वायु सम्भवं लोकं ब्रह्मा वाचो। मेरे प्यारे! देखो, माता ने जब ये मानो सर्वत्र उत्तर प्राप्त किया तो उन्होंने कहा कि एक शब्द है, मानो शब्द के साथ में एक मानो देखो, एक

परमाणु है, परमाणु के साथ में देखो और नाना प्रकार के परमाणु जैसे मधुमक्खी है, और मधुमक्खी में एक मानो देखो, विशेष मक्खियाँ होती हैं जिसको हमारे यहाँ 'रानी' के रूप में परणित किया जाता है। ये धिराजों के रूप में परणित किया जाता है उसके अन्तर्गत वे सर्व भ्रमण करती रहती हैं और इसी प्रकार एक मानो शिशु है, शिशु नाम का परमाणु है, उसके अन्तर्गत परमाणु भ्रमण करते रहते हैं। वही मानो देखो, यन्त्रों में साकार रूप बन करके मानो एक शब्द का आकार दृष्टिपात होता रहता है जिस शब्द में देखो उसकी आकृतियाँ दृष्टिपात होती रहती हैं। मेरे प्यारे! देखो, ये उद्दालक गोत्र में भी देवी होता रहा है और हम भी इसके ऊपर प्रायः अनुसन्धान करते रहे हैं। मेरे प्यारे! देखो जब महाराजा शिव ने ये वर्णन किया तो उनकी आभा एक विचित्रता में परणित हुई और उन्होंने कहा धन्य है प्रभु! आपने मेरे संशय को दूरी किया है।

देवत्त्व

मुनिवरो! देखो, विचार-विनिमय क्या, वेद का वाक्य ये कहता है क्या प्रत्येक जो शब्द है वो आकारित है, मानो देखो, देवपूजा के, **देवपूजा के जब हम आकार में जाते हैं तो इसलिये हमारा जितना भी शुद्ध, पवित्र शब्द होगा, उतनी हम देवपूजा करते रहेंगे, अग्न्याधान करके मानो देखो, वही हमारा देवत्त्व कहलाता है।** विचार-विनिमय क्या, मैंने बेटा! देखो कोई विशेषता नहीं देनी है, विचार केवल ये देना है कि हम अपने में महान्, पवित्र बन करके मानो देखो, देवपूजा में परणित हो जायें। हमारा देवत्त्व इतना विचित्र है। मेरे प्यारे! देखो ब्रह्म का चिन्तन तो प्रातःकालीन प्रायः होता रहता है परन्तु देखो देवपूजा भी प्रातःकालीन होती रहती है। देवपूजा का एक अभिप्राय है कि हम प्रत्येक देवता को हम मानो अपने में धारण करें, अपने में उसका पूजन उसी प्रकार का करें जैसा वास्तव में हम, हम और मानो देवता दोनों ही एक सूत्र में आ करके और मानो देखो, अन्तरिक्ष में, उन देवत्त्व में, अपनी-अपनी आभा में सर्वत्र नृत्य करने लगें

और निहित हो जायें। मेरे प्यारे! देखो जब ऋषि ने मानं ब्रह्मे जब महाराजा सम्भव प्रवे वृताम बेटा! जब ये वाक्य श्रवण कर लिया, तो वे दोनों अपने में मौन हो गये। उन्होंने कहा धन्य है प्रभु।

मेरे प्यारे! देखो यही वाक्य, इसी वेद मन्त्र को ले करके उद्दालक गोत्र के ऋषियों ने संसार की बहुत-सी वस्तुओं को जाना है। इन्हीं वाक्यों को ले करके विज्ञान के वाङ्मय में प्रवेश हो करके बेटा! नाना प्रकार के यन्त्रों को जानने का प्रयास किया है। और वे नाना प्रकार के यन्त्र विज्ञान के वाङ्मय में प्रवेश हो करके मानो अपनी आभा में निहित रहे हैं। तो विचार क्या, मेरे पुत्रो! देखो विचारना ये है कि मानव दर्शन को जानना, मानव दर्शन को अपने में दर्शाना है और मुनिवरो! देखो, **इस समाज को ऊँचा बनाने के लिए हमें अपने में मानो देखो, प्रीति को लाना है।**

याग के स्वरूप

मैं, अभी-अभी बेटा! देखो भगवान् कृष्ण की चर्चा हम कर रहे थे। मानो देखो, नाग के मन्थन की चर्चा कर रहे थे, क्या कृष्ण ने नाग का मन्थन किया, उन्होंने नाग याग किया। याग, याग का अभिप्राय, केवल आहुति देना ही याग है, ये भी याग है परन्तु इससे वायुमण्डल पवित्र होता है। इससे दूषित वायुमण्डल मानो देखो, वह समाप्त हो जाता है और शुद्धिकरण हो जाता है। परन्तु एक विचारों का शुद्धिकरण है, विचारों का शुद्धिकरण इसलिये क्योंकि राष्ट्र का जिस भी काल में निर्माण हुआ है, राष्ट्र का जिस भी काल में इसका मानो देखो, निर्माण होना प्रारम्भ हुआ, तो मेरे प्यारे! मेरी प्यारी माताओं का पूजन किया गया। माताओं का पूजन होना इस संसार में बहुत अनिवार्य है। मैंने बहुत पुरातन काल में महाराजा अश्वपति की भी चर्चायें की हैं। महाराजा अश्वपति के यहाँ नाना ऋषि-मुनियों का समाज एकत्रित हुआ और उसमें यही कहा गया क्या माताओं का पूजन होना चाहिये। पूजन का अभिप्राय क्या है, उनका यथोचित मानो देखो, उनको स्थान दिया जाये। यथोचित देखो, उनकी

प्रतिभा को अपने में धारण करना चाहिये। हे माता! तू ही तो शिशु का पालन करती है, तू आयुर्वेद के मर्म को जानने वाली है। जब तू आयुर्वेद के मर्म को जानने लगती है तो मानो तू सुसज्जित सन्तान को जन्म देती है, तू महानता की ज्योति में लाने का प्रयास करती है। तो मेरे प्यारे! देखो विचार क्या, हमारे यहाँ राजाओं, महाराजा अश्वपति के यहाँ भी मेरी प्यारी माताओं का पूजन बहुत अनिवार्य है।

पूजन का अभिप्रायः केवल ये है क्या मानो देखो, ओङ्कार, वेद की विद्यायें, वेद के मर्म को जानने वाली हों जिससे उनकी प्रतिभा उनके विचारों में एक साकल्य पवित्र बन सके और वे साकल्य बन करके वह पुत्रेष्ठि याग कर सके। मानो वो पुत्र-याग कर सकें। **याग का अभिप्राय ये है क्या परमाणुओं को एकत्रित करना, परमाणुओं को जहाँ का तहाँ परणित करना ही मानो देखो, याग माना गया है।** जैसे यज्ञशाला में विद्यमान हो करके यजमान अपने में याग करता है, और यजमान जब याग करता है, वो 'स्वाहा' कह रहा है वो मानो देखो, अपने में वृत्तियाँ बना रहा है और वृत्तियों को बना करके वे वायुमण्डल को पवित्र बना करके देवताओं को हवि दे रहा है। अग्नि में साकल्य प्रदान करता है, अग्नि उनका विभाजन कर देती है, और विभाजन करते ही मानो देखो, वह नाना रूपों में धारण करके, नाना रूप बना करके मेरे प्यारे! देखो, वायुमण्डल की प्रतिभा को ऊँचा बना देती है। तो विचार-विनिमय क्या, इसी प्रकार जब माता अपने विचारों से महानता का दर्शन देती है, बेटा! मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें निर्णय दिया क्या जब हम ऋषि-मुनियों के वाङ्मय में प्रवेश करते हैं, माताओं की चर्चा करने लगते हैं, तो विचार आता है कि वो माता कितनी विचित्र हैं, कितनी महान् रही हैं, जो मानो देखो, अपने में, अपने में ही अपनेपन को समेट करके और दर्शनों का अध्ययन—जैसे माता मदालसा का जीवन बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है। माता मदालसा, मानो शान्त चित्त हो करके अपने में वो वेद की प्रतिभा का, वेद का दर्शन करती रहती और ये कहती रहती बाल्याम् ब्रह्मे वाच-प्रभा। अपने गर्भ के आत्मा से वार्त्ता प्रकट करती रही हैं।

मुनिवरो! देखो, ये समाज और राष्ट्रवाद बेटा! अपने में मानो विचित्र बनता रहा है। राष्ट्रवाद की तो एक ही उपलब्धि है, **राष्ट्रवाद तो होता ही इसलिये है क्या प्रत्येक प्राणी अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करता रहे।** प्रत्येक मानव अपने-अपने कर्त्तव्यवाद की वेदी पर निहित रहे और कर्त्तव्यवाद का पालन करता हुआ मानो देखो, अपने में वो महान् बनता रहे। तो विचार-विनिमय क्या पुत्रो! क्या आज हम बेटा! तुम्हें ये कि राष्ट्रवाद के निर्माण में, राष्ट्रवाद की प्रणाली में केवल एक ही वाक्य आता है कि प्रत्येक मानव अपनी-अपनी आभा में निहित हो जाये, अपने में वो नाना प्रकार के यागों में परणित हो जाये, तो वह एक मानो देखो, राष्ट्रीयता कहलाती है। मुझे स्मरण आता रहता है जब मैं राजाओं की चर्चा में जाता हूँ। राजा को ये जानना चाहिये कि मैं प्रजा का सेवक हूँ और प्रजा ये जाने कि हम अपने कर्त्तव्य का पालन करते राजा को ऊँचा बनायें। मानो देखो, अश्व को ऊँचा बनायें। ये सब प्रजायें जहाँ प्रत्येक मानव अपने-अपने कर्त्तव्य की वेदी पर निहित हो जाते हैं। तो मेरे पुत्र ने मुझे इससे पूर्व काल में भी ये वर्णन मानो पुरातन काल से ही स्मरण आता रहा है। वो नाग याग करने वाले भगवान् कृष्ण, ये नाग याग का वर्णन आता रहता है, नाग याग का वर्णन क्या, क्या नाग जाति मानो देखो, वह उस पातालपुरी में जब एक विशाल क्रान्ति हुई, उस क्रान्ति के आने से नाग, नाग प्राणी यहाँ आये तो भगवान् कृष्ण ने उस समाज को एकत्रित करके और मानो देखो, याग करने के पश्चात् वह नाग-याग बन गया कि नाग अपने में सम्मिलित हो गए, अपने में एकोकीकरण हो गया। तो **समाज का एकोकीकरण करना भी एक याग माना गया है।** मानो देखो, ये हमारे यहाँ परम्परागतों से भी प्रायः देखो ऐसा क्रियाकलाप चला आ रहा है जिसके ऊपर हमारा साहित्य, हमारी मानवीयता, वैदिकता और देवत्त्व मुनिवरो! देखो, उसमें निहित रहा है। मानो देखो, वह हिमालय में रहने वाले जो प्राणी थे मानो देखो, जो अकर्त्तव्यवादी उनको भगवान् शिव ने मेरे प्यारे! देखो उनको अपने में लाने का प्रयास किया। राष्ट्र को ऊँचा बनाया। कर्त्तव्यवाद की भावना देना ही मुनिवरो! देखो, राष्ट्रीयता कहलाती है।

जब राष्ट्र में राजा तप करता है और तप के पश्चात् देखो, प्रजा को पुनः से ऊँचा बनाता है। मानो देखो, राजा उसे नहीं कहते जो प्रजा के वैभव को संग्रह करने वाला हो। हमारे यहाँ मनु जी ने ये कहा है, भगवान् इक्ष्वाकु मनु ने ये कहा है क्या सम्भव ब्रहे लोकाम्–राजा के राष्ट्र में प्रत्येक प्राणी की रक्षा होनी चाहिये। मानो देखो, एक मछली से ले करके मानव तक की रक्षा होनी चाहिये। और मानो देखो, क्योंकि परमात्मा ने, जितनी योनियाँ हैं, संसार में जितना योनि विभाग है, वो कोई न कोई लाभप्रद के लिए ये उत्पन्न हुआ है। ये प्राणी से उसका एक मानो देखो, सहयोग बना हुआ है। सहकारिता में वो पिरोया हुआ है। तो इसलिये प्रत्येक प्राणी मानो देखो, प्राणी अपने में प्राणीत्व की सेवा करता रहे, प्राणी, प्राणी में बिंधा हुआ है, एक-दूसरे में ओत-प्रोत हो रहा है। तो मेरे प्यारे! विचार भगवान् इक्ष्वाकु मनु ने कहा, क्या देखो मछली से ले करके मानव तक की रक्षा हो, उस राजा को राष्ट्रवेत्ता कहते हैं। वो ब्रह्मज्ञान में परणित रहने वाला हो। उसे इतना ज्ञान हो जिससे वो प्राणियों की विवेचना कर सके, क्या देखो सर्पराज है, आज एक सर्पराज को नष्ट करना, ये मानवीय प्रणाली में मानो देखो, अशोभनीय कहा जाता है। सर्पराज तो लाभप्रद होते हैं। ये जो मानव है, ये नाना प्रकार के विष को उगलता रहता है। तो जितने हिंसक प्राणी हैं, विषैले प्राणी उन सब को त्याग देना, मानो जितने विषैले हैं ये वायुमण्डल में से विष का अपने में सिञ्चन करते रहते हैं। विष को अपने में लेते रहते हैं और अपने में जो प्राणवर्धक वायु है उसे त्यागते रहते हैं। वाह रे मेरे प्रभु! तू कितना विज्ञानमयी कहलाता है। मानो यहाँ प्रभु के विज्ञान को विचारना चाहिये। मेरे प्यारे! इसलिये वेद का ऋषि कहता है, आचार्य कहता है अहप्रमाणं ब्रहे कृतम बृहिव्रता क्या मानव, मानव का भक्षण न करे, मानो वेद का वाक्य कहता है क्या प्रत्येक प्राणी की रक्षा होनी चाहिये वो राष्ट्र के लिए, समाज के लिए, प्राण के लिए लाभप्रद है, इसलिये देखो एक-दूसरे में जो जिसका आहार है, वो अपना आहार और व्यवहार करता रहे, उसमें याग की प्रतिभा, अहिंसा परमोधर्म की प्रतिभा रहनी चाहिये।

मेरे प्यारे! देखो ये परमात्मा की सृष्टि का जो नियम है, उसे अपने में धारण करके वो देवत्त्व को प्राप्त हो जाये। वो उसकी पूजा का अर्थ केवल उसकी रक्षा है, ये उसकी पूजा कहलाती है। हमारे यहाँ बेटा! देखो हमारे राष्ट्रवेत्ताओं ने मच्छ की भी सेवा की है। मानो देखो, मच्छ की सेवा का अभिप्राय उनकी रक्षा की है। मेरे प्यारे! देखो उन्होंने कच्छप प्रहाः कच्छ की सेवा की, मच्छ की सेवा की। जब ये विचार आता है, तो हृदय गद्-गद् हो जाता है और मैं ये कहा करता हूँ पुत्रो! ये मानो देखो, परम्परा की जो नियमावली है, ये मानव समाज में आ जाये, तो समाज शान्तिप्रद बन करके, अपने में महानता की ज्योति वाला बन करके इस सागर से पार हो जाये।

आज बेटा! मैं आध्यात्मिक युग में तो तुम्हें ले जाना नहीं चाहता हूँ, विचार केवल ये है क्या आज मुनिवरो! देखो, हम अपने में सम्मिलित विचारधारा को अपना करके इस सागर से पार हो जायें। बेटा! आज का विचार हमारा क्या कह रहा है, मैंने तुम्हें कुछ बिखरे हुये पुष्पों को एकत्रित करने का प्रयास किया है। उसी आभा को लाने के लिए हम तप कर रहे हैं। बेटा! देखो विचार आया क्या हमारे यहाँ भगवान् कृष्ण की चर्चायें आयें, नाग जाति की चर्चा आई, बेटा! नाग जाति अपने में विजातीय बन गई मानो वे अपने में देखो विजातीय हो करके सजातीय बन गई और इसी प्रकार मानव की राष्ट्रीयता में एक धारा रहनी चाहिये क्या सम्मिलित होना उन विचारों में एक विघट मानो उनमें सम्भ्रवा एक समकालीन हो करके समाज को ऊँचा बनायें। ये है बेटा! आज का वाक्। आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः ये कि हमारे यहाँ भिन्न-भिन्न प्रकार के यागों का चयन परम्परागतों से बेटा! प्रायः होता रहा है। उन विचारों को लाने के लिए हम सदैव तत्पर रहें। उन विचारों में हम अपने को ले जायें जहाँ मुनिवरो! देखो, मानवता की महानता का दर्शन होता है। **मानव का दर्शन कहाँ होता है? जहाँ प्रीति होती है, जहाँ प्रीति में ज्ञान होता है, जहाँ ज्ञान में विवेक होता है, और जहाँ विवेक में बेटा! देखो मानव व्यष्टि से समष्टि में प्रवेश कर जायें वही तो मुनिवरो! देखो, दर्शन, उसे मानवीय दर्शन कहते हैं।** तो

मुनिवरो! देखो, मैं शेष चर्चायें तो कल ही प्रकट करूँगा। आज का विचार तो हमारा ये कह रहा है क्या हम मुनिवरो! देखो, अपने में महान् बनें, समाज की प्रतिभा को ऊँचा बनायें और परमपिता परमात्मा के ज्ञान और विज्ञान को जान करके हम मानो देखो, उसकी पूजा में रत्त हो जायें। बेटा! उस की पूजा में रत्त हो करके, हम पूजक बन करके पूजक ब्राहा वाचन्नमं ब्रह्मा लोकाम् बेटा! ये उसके कर्त्तव्यवाद की वेदी पर ही निहित होना उसकी पूजा कहलाती है। आज का विचार-विनिमय क्या, हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुये, देव की महिमा का गुणगान गाते हुये हम बेटा! इस संसार-सागर से पार हो जायें जिससे हमारा जीवन मानो देखो, पवित्रता की वेदी पर निहित हो जाये। आओ मेरे पुत्रो! आज का विचार हमारा क्या कह रहा है क्या हम मुनिवरो! देखो, हम पूजक बनें, परमपिता परमात्मा के उस स्वरुप को जानने के लिए जो जड़वत् में, चैतन्यवत् में जो निहित रहने वाला है। ये है बेटा! आज का वाक्। अब मुझे समय मिलेगा मैं तुम्हें शेष चर्चायें कल प्रकट करुँगा। आज का वाक्य अब ये समाप्त करने जा रहा है।

आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्रायः ये कि मानव को मानवीय दर्शन जनता में, जनार्दन में दर्शन करना चाहिये। ये है बेटा! आज का वाक्य, समय मिलेगा शेष चर्चायें कल प्रकट करेंगे। इसके पश्चात् ये वार्त्ता समाप्त।

वेदपाठ.....

महर्षि महानन्द जी–अच्छा भगवन्! आज्ञा।
पूज्यपाद-गुरुदेव–ओ३म् शान्तिः।

दिनाँक : 6 मई, 1986
समय : प्रातः 10 बजे
स्थान : रामनगर कॉलोनी,
ग्राम कांधला

॥ ओ३म् ॥

आर्यावर्त्त

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! अभी-अभी हमारा पर्यन्त समय समाप्त हुआ। आज हम तुम्हारे समक्ष, पुनः की भाँति, कुछ वेद मन्त्रों का गान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने जिन वेद मन्त्रों का पाठ किया और आज का जो हमारा वेदज्ञ मन्त्र हमें सूक्ष्म रूप से जो प्रेरणा दे रहा था, वह बड़ी विचित्र है, वह मानो विचित्र है। जिसको जानने से हमारे हृदयों में, इस अन्तरिक्ष में, सर्वत्र लोक-लोकान्तरों में, जिसकी ज्योति से यह सब विश्व प्रकाशित है। हे परमात्मन्! तू कितना अनुपम है। प्रभु! तेरी रचना कितनी अनुपम है। तेरा रचाया हुआ यह मानव शरीर कितना अनुपम है। प्रभु! तेरी महानता का वर्णन किया जाता है, हम भी किया करते हैं, और भी नाना किया करते हैं। परन्तु मेरे देव, तेरी महिमा बड़ी अनुपम है, विचित्र है। आज हम तेरी महिमा को विचारते रहते हैं–प्रभु! हम नक्षत्रों पर जाते हैं, किसी काल में प्रवृत्ति चन्द्र मण्डल पर जाती है, किसी काल में प्रवृत्ति सूर्य लोकों में जाती है वही प्रवृत्ति भगवन्! और भी नाना प्रकार के लोकों में रमण करती है। परन्तु ये सब कुछ क्या है? ये केवल हम कल्पना करते हैं, किसी कार्य को करने के लिये हम केवल कल्पना करते हैं। परन्तु वह कल्पना, एक विशाल स्वरूप को धारण कर लेती है, वह विशाल स्वरूप को धारण कर लेती है, उस विशालता में हमारा जीवन नष्ट-भ्रष्ट हो जाता है, जिससे मुनिवरो! हमें प्रतीत होता है, हम उन्हीं वाक्यों को विचार-विनिमय में लाते हैं कि वास्तव में हमें, वास्तव में कुछ चर्चा प्रतीत होती है। आज हमारी कल्पना तो मिथ्या ही नहीं होती, हमारी कल्पनाओं में संसार का विज्ञान भी होता है। हमारी कल्पनाओं में मानो जीवन के लिये शान्ति का एक संदेश भी होता है। परन्तु देखो, हमें तो बेटा! उस वर्तमान को विचारने का पूर्व प्रयत्न करना है। बेटा! आज मैं विशेष व्याख्या नहीं प्रगट करूँगा। अधिक समय नहीं लूँगा।

एक अमूल्य ज्योति

आज का जो वेद कहता चला जा रहा था, मैं संक्षेप में चर्चा कर रहा हूँ। बेटा! वेद ने आज कितना सुन्दर वर्णन किया है, वेद तो स्तुति, शान्ति का एक प्रतीक है। वेद एक अमूल्य ज्योति है जिसमें बेटा! वेद स्वयं वेद के प्रकाश का सूक्ष्म-सा सङ्केत मिला है और वह क्या सङ्केत था? सूक्ष्म सङ्गतं प्रमाणे वस्तुति विश्रममु, वह सूक्ष्म प्रेरणा है, मानव को परमात्मा के गर्भ में पहुँचाने की। मानव को इस संसार में, स्वच्छ और अहङ्कार वाले, बल से हीन संसार में नहीं रहना चाहिये। बेटा! जो मानव, बल से हीन रहता है, कर्म क्रियाओं से हीन रहता है, अपने जीवन का भी वह हीन होता है, तो वेद ने कहा कि उस मानव का संसार में कोई जीवन नहीं। मानव द्रव्यपति हो, उसका शरीर अस्वस्थ रहने वाला हो तो वह द्रव्य कोई महत्त्व वाला नहीं कहलाता। परन्तु द्रव्य न हो और मानव जीवन श्रेष्ठ हो उसके लिये मानो जीवन है। अरे! वह द्रव्य क्या पदार्थ है, उस प्राणी के लिये। मैं बेटा! माया का, श्री लक्ष्मी का विरोधी नहीं हूँ क्योंकि इससे राष्ट्र चलता है, मानव जीवन का पालन-पोषण होता है, हम इसके विरोधी नहीं, परन्तु विरोधी इसके हैं जो केवल सर्वस्व इसी का पुजारी बन जाता है। और सर्वस्व इसी को स्वीकार कर लेता है, इसके अन्तर्गत, इसके आङ्गन में आ करके नाना प्रकार के पाप अङ्कुर अपने अन्तःकरण में विराजमान कर लेता है तो इसके हम विरोधी हैं। हम केवल श्री लक्ष्मी के विरोधी नहीं हैं, जो अनादि काल से चली आ रही हैं। मुनिवरो! हम तो विरोधी हैं तो केवल उस वस्तु के हैं, जिसमें कोई मानो मन्तव्य नहीं, उन कार्यों को करता चला जाता है, हम तो केवल उसके विरोधी हैं। वेद तो बेटा! सङ्केत देता चला जाता है, मैंने इससे पूर्व काल में, कुछ सङ्केत दिए, अपने कुछ विचार भी प्रगट किये, कुछ सृष्टि के और इस संसार के परिवर्तन की चर्चा, मानव के विचारों में परिवर्तन आ जाना, मैंने सूक्ष्म-सूक्ष्म चर्चायें प्रगट की हैं। मुझे आज अधिक समय नहीं। आज मेरे प्यारे! महानन्द जी अधिक समय लेंगे।

धर्मज्ञ और शुद्ध सङ्कल्पवादी प्राणी

मैं तो केवल यह वाक्य प्रगट करने जा रहा हूँ कि हे मानव! तू उस प्रभु

का, प्रभु की सृष्टि को विचार, मानव जीवन को विचारने वाला बन, और अपने जीवन को ऊँचे शिखर पर ले जा। मुझे ऋषि ने सङ्केत दिया, मुझे आदि सृष्टि का यह प्रकरण और प्रलय काल का समय, दृश्य स्मरण आता है तो हृदय में एक कम्पन्नता आती है। जिस समय मुनिवरो! देखो, प्रलयकाल आता है, निश्चित है, जो मानव धर्मज्ञ होता है, जिस मानव का अन्तःकरण पवित्र होता है, और वह भी शुद्ध होता है मुनिवरो! वह प्रलयकाल में क्या, सृष्टि की रचना में, संसार को वही आत्मा आ करके यहाँ नियमबद्ध कर देती है। परन्तु देखो, जिस समय प्रलय काल होता है, प्रलय काल में बेटा! देखो, क्या-क्या होता है वह सब तुम्हें प्रतीत है और वह यह होता है, नाना प्रकार के प्रकृति के आक्रमण आते हैं, मानव का जीवन नष्ट होने लगता है, जल के प्रहार, आक्रमण होने लगते हैं, अग्नि का आक्रमण होने लगता है, अपने-अपने स्वरूप में जाने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु बहुत से प्राणी, बहुत से दृढ़ सङ्कल्पवादी जैसे बालक नचिकेता, जैसे बालक प्रहलाद और भी आदि, बेटा! प्रकृति का आक्रमण हो रहा, मनुष्य नष्ट करने के लिये उद्यत हो रहे हैं। परन्तु वह अपनी मर्यादा भङ्ग नहीं करते, वह सदैव उसी स्थिति में रहते है जैसे महात्मा भृगु। प्रकृति का आक्रमण होता है, प्रकोप होता है, पित्त प्रधान हो जाता है, किसी काल में वायु प्रधान हो जाती है, किसी काल में दोनों का सम्पर्क हो जाता है। परन्तु यहाँ, जो धर्मज्ञ है, शुद्ध सङ्कल्पवादी है उसके हृदय से प्राप्त करो कि उसे क्या प्राप्त होता है, उसके हृदय में कितनी विचारधारा पवित्र है। वह मानव कितना आस्तिक और कितना उस प्रभु का पुजारी है। बेटा! सर्पों के आक्रमण होते हैं, परन्तु उसे कुछ ज्ञान नहीं होता, सर्पों से दूरी परन्तु देखो, सब कुछ कितनी विचित्र गति है, परन्तु देखो, वह प्राणी, कितना सौभाग्यशाली है बेटा! जिस मानव को मानो देखो, उन आपत्तियों से भी, किसी काल में अपने उद्देश्य को नहीं त्यागता, वह मानव कितना सौभाग्यशाली है बेटा! उस मानव के द्वारा कितनी दृढ़ता है, प्राणी जब मानो जब अपने को जान लेता है। परन्तु मैं तो केवल यहीं अपने वाक्यों को समाप्त करने जा रहा हूँ।

मुझे तो संक्षेप ही आदेश देना था, वह यह कि **हमें वैदिक ज्योति को विचारना है,** हमें अपने साहित्य को विचारना है, हमें अपने मानव जीवन की

गाथाओं को विचारना है, मन पर संयम करना है, और दृढ़ सङ्कल्पवादी बनना, शरीर को नाशवान जान करके और मुनिवरो! देखो, बलिष्ठता, मानवता, उसकी कायरता समाप्त हो जाती है। बेटा! अब मैं अपने वाक्यों को समाप्त करने जा रहा हूँ अब जैसा महानन्द जी ने कहा है, वह अपने विचारों को प्रगट करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

ओ३म् रयिमां तपत्वा प्रपृधा युज्चते वरुणो पदमस्ति व्रताः रेवं नमस्ते नस्मते नमस्ते।

मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव! मेरे आदि ऋषि मण्डल! मेरी पूजनीय माता! मेरे भद्र समाज! मुझे मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव! ने आज यह कुछ समय के पश्चात् यह एक अमूल्य समय दिया। मेरे पूज्यपाद की जो एक अनुपम, एक अमृत धारा चलती है, उसका केवल एक ही मन्तव्य रहता है, सर्वस्व जितनी वार्त्ता की माला है, गाथा की माला है, उस गाथा का केवल एक ही मन्तव्य है और वह है दृढ़ सङ्कल्प, वह है दृढ़ता। मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव ने मुझे यह पुनः कुछ समय के पश्चात् यह समय दिया है। जिस समय में, मैं आज प्रत्येक वाक्य को व्यापक रूपों में प्रगट कराने जा रहा हूँ। आज के संसार को क्या बनना है, और क्या बनना था और क्या बन गया, यह विचारने का शब्द, मैं तो केवल, वह वाक्य स्पष्टीकरण कराने जा रहा हूँ, जो मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव! ने मुझे स्मरण कराये। मैंने एक समय अपने पूज्यपाद-गुरुदेव से कहा, **प्रभु! संसार में भौतिक विज्ञान प्रगतिशील है, यह भौतिक विज्ञान क्या करेगा?** परन्तु मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव ने एक ही उत्तर दिया और वह उत्तर यह दिया कि मानव में अभिमान आ जायेगा, मानव में नष्ट-भ्रष्ट करने की आस्था, निराशा होती चली जायेगी। आज मैं उन वाक्यों को ले करके ही चल रहा हूँ जो गुरुदेव ने मुझे संक्षेप में वर्णन कराये। मैंने अपने पूज्य गुरुदेव से कहा प्रभु भौतिक विज्ञान का किस काल में विनाश हो जाता है और संग्राम जब होता है तो उसके क्या-क्या लक्षण होते हैं राष्ट्र में? मैंने अपने पूज्य गुरुदेव से एक ही प्रश्न किया। उन्होंने सन्तुष्टि, उनकी वाक्य माला से, मानो मेरे हृदय की सन्तुष्टि नहीं हो पाई। परन्तु, आज मैं वह चर्चा उच्चारण

करने आया हूँ जो शब्द व्यापक हो करके चलता है, सूक्ष्म हो करके चलता है और व्यापक हो करके चलता है। आज के संसार में, सबसे पूर्व तो यह माना, कि सृष्टि की रचना को केवल सात लाख वर्ष के लगभग हुआ, कोई कहता है, कुछ किसी प्रकार से मानते हैं। परन्तु वैदिक साहित्य क्या कहता है यह विचारते नहीं।

वेद ईश्वरीय ज्ञान

यहाँ देखो, पश्चिमी संसार ने यह माना, कि वेद तो ऋषियों के बनाये हुये हैं, ऋषियों से ही आये। परन्तु यह हम भी मानते हैं, ये पश्चिमी बुद्धिमान ही नहीं मानते, इसको हम भी मानते हैं और वह किस रूप में मानते हैं, हम किस रूप में माना करते हैं। उन्होंने कहा भई यह जो वेद है, यह ऋषियों का ज्ञान है, हम यह कहा करते हैं कि ऋषियों का नहीं, परमात्मा का ज्ञान है। अब दोनों का हमें मिलान करना है, किस प्रकार कर सकते हैं दोनों वाक्यों का। हम यह जानना चाहते हैं कि ऋषियों का ज्ञान किस प्रकार है और परमात्मा का ज्ञान किस प्रकार है? मुनिवरो! देखो, परमात्मा का ज्ञान तो इसीलिए है, जो हम निश्चय किया करते हैं कि परमात्मा का ज्ञान है इसमें किसी प्रकार की न्यूनता नहीं, कोई इसमें किसी प्रकार दोष नहीं आ सकता। और जिस ज्ञान में कोई किसी प्रकार का दोष नहीं आ सकता, वह ज्ञान भी परमात्मा की देन है। मनुष्य अपने ज्ञान से कितना ही बुद्धिमान हो, ऋषि हो, प्रज्ञा चक्षुवादी हो, परन्तु जब वह किसी वाक्य को ले करके चलता है धार्मिकता को, और वह किसी काव्य को बनाता है, परन्तु उसमें कोई न कोई पक्षपात की धारा होती है। इसीलिए वह ईश्वरीय ज्ञान है क्योंकि इसमें किसी प्रकार का पक्षपात नहीं। ये सारे संसार के लिये, इसमें एकता है और यह पृथ्वी मण्डल के लिये नहीं, यह चन्द्र, सूर्य और बृहस्पति लोकों के लिये भी इसी भाँति का है। आज इसमें व्यापकता हो। आज हम उसको कह सकते हैं कि **यह परमात्मा का ज्ञान है, यह परमात्मा की अमूल्य निधि है।** मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव तो आत्मा परमात्मा की चर्चा, नाना रूपों में वर्णन कराते हैं, परन्तु आज के संसार का ज्ञान नहीं।

राष्ट्र की निधि

आज जहाँ हमारे व्याख्यान की माला जा रही है, जहाँ मेरे पूज्य गुरुदेव का वह भौतिक पिण्ड है, परन्तु यह वह स्थान है जिस स्थान पर महाराजा कृष्ण विराजमान और महाराजा कृष्ण, क्या सूक्ष्म-सा गृह, उसमें वह विराम किया करते थे, पाण्डव को निर्णय देने के लिये। यह वह पवित्र स्थान है जहाँ युधिष्ठिर ने पवित्र यज्ञ किया, जहाँ ऋषि मुनि निमन्त्रण सहित, राजाओं को सन्तुष्ट नीति का पाठ पढ़ाने के लिये आये। परन्तु आज विचारने वाला जो शब्द है, वह क्या है? मेरे गुरुदेव! वह केवल यही है, आज हमें विचार-विनिमय कर लेना चाहिये, कि हम कहाँ हैं, कहाँ थे, क्या बन गये? मैंने, मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव वह समय दृष्टिपात किया है, जब यहाँ स्वार्थी मनुष्यों ने, स्वार्थी प्राणियों ने अपने सूक्ष्म से स्वार्थ के लिये देखो, राष्ट्र की निधि की निधि को समाप्त कर दिया, और वह निधि क्या होती है? **सबसे उज्ज्वल यदि कोई राष्ट्र की निधि है, सबसे पवित्र यदि राष्ट्र की कोई निधि है, तो वह संस्कृति है।** राष्ट्र की निधि संस्कृति है और उस निधि के बिना राष्ट्र देखो, किसी प्रकार भी नहीं चलता। देखो, जिस राजा के द्वारा द्रव्य होता है और द्रव्य को अच्छी प्रकार उपयोग में लाने के लिये निधि नहीं होती तो वह द्रव्य भी कोई भी, वह द्रव्य मृतक है, व्यर्थ है, उस द्रव्य का क्या बनेगा इस संसार में? परन्तु मैं यही कहने आया हूँ। आज मैं सूक्ष्म-सा वेद का प्रकाश देता चला जा रहा था, आज के संसार में, इस भारत भूमि में, जहाँ राम और वशिष्ठ, जहाँ महाराजा रघु, महाराजा सगर, महाराजा असमञ्जस, महाराजा हरिश्चन्द्र, महाराजा भागीरथ, शुभ्रान, अञ्चेत, धृति, ध्राष्टकेतु आदि ऋषि ये नाना प्रकार की प्रणाली, राम की प्रणाली, रघुकुल की चलती रही आदि, आदि।

वेद और उनकी संहितायें

परन्तु इसके उच्चारण करने का क्या अभिप्रायः है आज मुझे, मेरे गुरुदेव तो कई काल में निर्णय कर चुके है। परन्तु मुझे तो केवल यह कहना है, कि आज यह मान बैठे हैं कि यह जो विज्ञान आया है, भौतिक विज्ञान यह पश्चिमी

पृथ्वी मण्डल से आया, पश्चिमी से आया है हमारे द्वारा नहीं था। अरे! कहाँ थे तुम? अरे! क्या उच्चारण कर रहे हो, अरे! जहाँ महर्षि जैमिनी ने जा करके, आधुनिक काल में मेरे गुरुदेव तो जानते नहीं, आधुनिक काल में उसे जर्मनी कहते हैं, जैमिनी जी ने जिसका निर्माण किया था। महाराजा जन्मेञ्जय, जिस समय महाभारत का काल समाप्त हो गया, महाराजा जन्मेञ्जय यहाँ से जितने चारों वेद थे, उनकी संहितायें थीं, वह सब देखो, जिसे आधुनिक काल में हम जर्मनी कहते हैं, उसमें उन्होंने उसमें विद्यमान किये, और वहाँ देखो, वीर अभिमन्यु का, अर्जुन का, घटोत्कच्छ इन सबका साहित्य देखो, वहाँ चला गया था। उनका सूक्ष्म-सा साहित्य और जो यहाँ रह गया, अरे! यहाँ इतने स्वार्थी बन गये महाभारत काल के पश्चात् का इन्होंने देखो, पुस्तकालयों से ज्ञान लेना शान्त कर दिया, उनको अग्नि के मुख में परणित कर दिया, जब अग्नि के मुख में कर दिया तो यहाँ अज्ञानता नहीं आती तो और क्या आता।

सोमरस

अरे! जहाँ यहाँ सोमरस को पान करने वाला, यहाँ देखो, गुरु द्रोणाचार्य ने, पितामह भीष्म ने, सोमरस के ऊपर एक पुस्तिका बनाई, लेखनीबद्ध की उसमें और यह कहा कि प्रत्येक प्राणी सोमरस का पान करने वाला बने। सोमरस किसे कहते हैं? यहाँ शाकाहारी बनना चाहिये, यहाँ अन्न का पान करना चाहिये और इस भारत भूमि को देखो, स्वर्ग बनाना चाहिये। आज जब वह सभी उन गुरुओं की निधि, उन राष्ट्रों की निधि, अग्नि के मुख में चली गई, तो क्या करते। परन्तु शाकाहारी न बन करके, आज यह प्राणाहारी बन गया संसार, प्रतिहारी बन गया, परन्तु जब शाकाहार को समाप्त करके यह अग्नि के मुख में इन्होंने दे दिया, तो यह और क्या बनते। परन्तु मैं केवल संक्षिप्त, संक्षिप्त वाक्य प्रगट करूँगा। वास्तव में उच्चारण करने के लिये इतना है कि मुझे, इतना कि है कि यह संसार देखो, कहाँ जा रहा है परन्तु देखो, आज मुझे कहानियाँ बहुत हैं उच्चारण करने के लिये, परन्तु समय सूक्ष्म है। आज मैं दर्शनों की, संसार की चर्चा करता चला जाऊँ तो नहीं समाप्त होगीं। मैं आज मैं केवल इतना ही वाक्य प्रगट कराने

आया हूँ, कि आज के मानव को यह नहीं मान लेना चाहिये, कि यहाँ विज्ञान नहीं था। यह विज्ञान आज देखो, प्रत्यक्षवादी मानते हैं कि हम प्रत्यक्षवाद को मानते हैं। परन्तु देखो, आज तुम्हें यह ज्ञान होना चाहिये, जितना भी संसार में अप्रत्यक्षवादी है, अप्रत्यक्ष में जाओंगे वहाँ तुम्हें कुछ मिलेगा, प्रत्यक्षवादी बनोंगे, वहाँ तुम अपने को, कुछ को नष्ट कर दोंगे, मैं इसका विरोधी नहीं की प्रत्यक्षवाद नहीं होना चाहिये, प्रत्यक्षवाद भी होना चाहिये। परन्तु देखो, अप्रत्यक्षवाद भी, जिसे हम परमात्मा, जिसे ओ३म्, जिसे और भी अन्य रूपों से संसार मानता चलता आया है। परन्तु मैं केवल एक सूक्ष्म-सा आदेश प्रगट कर रहा था। आज यहाँ क्या बनना है, यहाँ केवल देखो, सोमरस का पान करना है। यहाँ केवल अन्न का भक्षण करना है, यहाँ नाना सोम लताओं को पान करना है, यहाँ मानो जैसा जिसका जिसका अमृत है, परमात्मा ने जैसा जिसको बनाया है, वैसा ही इसको आहार पान करना है और यदि इससे कोई विपरीत चला मानव अपनी बुद्धि को नष्ट-भ्रष्ट करता चला जा रहा है।

आर्यों की धरोहर

आज जब हम संसार का भ्रमण करते हैं, इस भारत भूमि का, द्वितीय राष्ट्रों का भी भ्रमण करते हैं संसार में विज्ञान की तुलना करते हैं, परन्तु देखो, यह यहाँ तो विज्ञान भी होना चाहिये परन्तु विज्ञान के साथ-साथ, परन्तु यह न मानो कि यह विज्ञान हमारे द्वारा नहीं था, यह पश्चिम से आया है। अरे! नहीं यह तो परिवर्तन होता है। आज जिन्हें तुम वैज्ञानिक कहते हो, अरे! वह काल था, अब जिसको आधुनिक काल में तुम रूस कहते हैं और आज पातालपुरी, अमरीका कहते हों, परन्तु उन राष्ट्रों में देखो, महर्षि वेदव्यास को ले गये और वहाँ उन्होंने शिक्षा को ग्रहण किया। आज कहाँ हो तुम? परन्तु वे गुरु हमारे थे, जिन्होंने देखो, संसार में अपने जीवन को अवतरण कर दिया, अपने जीवन को दे दिया, परन्तु देखो, उन मूर्खों को, जहाँ आज तुम जिन्हें बुद्धिमान तुम समझे हो, तुम्हारे विराजमान है बुद्धिमानता में उन्हें आज तुम अपने हृदय में स्थान देते हो, वे मूर्ख देखो, परन्तु मूर्खता से उन्हें मनुष्यता में लाने का प्रयत्न किया।

आज परन्तु देखो, इसको आज हमें विचारना चाहिये। आज हमें यदि पूर्व की भाँति बनना है, वेदव्यास की भाँति बनना है, हमें जैमिनी और देखो, महर्षि भृगु आदि आचार्यों की तुलना करनी है, तो हम स्वर्ग बना सकते हैं संसार को, अन्यथा क्या होगा, यह तुम्हें प्रतीत है। जिस समय इस महा ब्रह्मणी वस्ता आर्यावर्तो का, जहाँ आर्य विराम करते हैं, जहाँ आर्य रहते हैं, तुम्हें प्रतीत है, **जब आर्यों का आहार व्यवहार समाप्त हो जाता है तो संसार कहाँ जाता है, जब संसार कहाँ जाता है तो संसार अग्नि के मुख में चला जाता है।** तो प्रतीत है अग्नि के मुख में चला जाता है परन्तु अग्नि क्या, जो आज तुम्हें प्रत्यक्ष है, भस्मासुर वाली है, जैसा गुरु जी ने वर्णन, मेरे पूज्य-गुरुदेव ने वर्णन किया जैसे नहुष की वार्त्ता है परन्तु इसी प्रकार प्रत्येक मानव अग्नि के मुख में जाने के लिये उद्यत हो रहा है, यह उस वेदी पर पहुँच चुका है। आज का संसार उस वेदी पर पहुँच चुका है जहाँ देखो, जिस गढ्ढे में अग्नि प्रदीप्त हो रही है, आज उसमें तत्पर है, आज इसमें देखो, अग्नि में प्रविष्ट होने के लिये उद्यत हो रहा है। यह क्या है, परन्तु देखो, अग्नि के मुख में जाने के लिये प्रत्येक मानव प्रयत्नशील है।

गौ माता और जीवन

आज कैसे प्रयत्नशील है, आज यही प्रश्न होता है, अरे! प्रयत्नशील इसलिए है कि जहाँ आज यह राजा है अरे! जहाँ, मैं देखता हूँ, गुरुदेव को तो प्रतीत नहीं, जहाँ गऊओं का निरादर किया जाता है, जहाँ गऊओं का निरादर किया जाता हो, जहाँ एक गऊ का निरादर देखो, महाराज दिलीप जी ने किया, उसी गऊ के निरादर के लिये वशिष्ठ ने आज्ञा दी, गुरु ने कहा अरे! यह तूने क्या किया राजा, अरे! गऊ का निरादर किया तुमने, परन्तु देखो, बारह वर्ष तक गऊ का सेवक बन करके रहा। अरे! वह राजा, आज के राज्य संसार की क्या गति है, आज के संसार की क्या विचारधारा है, आज का संसार कहता है अरे! अन्न से तो उदर की पूर्ति होती नहीं, और क्या करेंगे, इससे अपने उदर की पूर्ति करेंगे। अरे! यह क्या है, यह किसी काल में तुमने विचारा है या नहीं। परन्तु इन वाक्यों को विचारों, इनमें क्या रहस्य है। आज राजाओं से कहो महाराज! गऊओं

की रक्षा करने के लिये कुछ किया जाये, उन्होंने कहा, राजा कहते हैं सम्भू वर्णोस्ति अनिकृता-अनिकृता वञ्चति प्रवणे सहे अरे! गऊओं की, तुम कहाँ गऊओं को स्थिर करते हो, परन्तु त्रधि प्रवणे वर्तते अरे! जहाँ तुम देखो, सूक्ष्म जो तुम्हें लाभ देते हैं, सुगन्धिवर्धक तुम्हें वायु देते हैं आज तुम देखो, सूक्ष्म से प्राणियों को अपने मुख में अर्पित कर जाते हो। जहाँ गऊओं का तुम्हें दुग्ध पान करना था, घृत पान करना था आज के संसार में उसे सर्वत्र को ही भक्षण करना प्रारम्भ कर दिया। अरे! क्या यह संसार जीवित रह सकेगा, क्या यह प्राणी जीवित रह सकेगा, अरे! क्या देखो, गऊओं के रक्त को पान करने से, क्या प्रतीत, तुम्हारे अन्तःकरण में क्या बनेगा, अरे! देखो, आज तुम देखो, गऊओं के पान करने से तुम्हारे शरीर में क्या बनेगा, यह किसी काल में विचारा है या नहीं? परन्तु नहीं विचारते, क्यों नहीं विचारते क्योंकि विनाश का समय जो आता चला जा रहा है इसलिए नहीं विचारा जाता है, तो बुद्धिमान कहता है, अरे! यह तो ऐसे ही बकते रहते हैं। परन्तु उनको बकना उच्चारण किया जाता है और कहीं मांस भक्षण की चर्चा हो रही हो ओह! यह तो बड़ा बुद्धिमान है, अरे! पश्चिम से आया है और देखो, इनके यहाँ यही भक्षण किया जाता है। यह बड़ा सभ्य है परन्तु उनको सभ्यता का पाठ, कहाँ बुद्धिमान तुम्हें वृत्तियों वक्ता है। आज का संसार .... जीवित रह सकेगा, परन्तु कदापि जीवित नहीं रह सकेगा और तुम अरे! जहाँ देखो, संसार के गुरु बन करके, तुम्हारा एक समाज चलता था ब्राह्मणों का, परन्तु आज वह तुम्हारा शान्त हो करके, आज तुम्हें देखो, वे आते हैं, और वे शिक्षा दे जाते हैं जिन शिक्षाओं से तुम्हारे जीवन का और राष्ट्र का विनाश हो जाता है।

संग्राम के लक्षण

देखो, मेरे गुरुदेव! ने वर्णन किया, कि जब विनाश का, संग्राम का समय आता है तो क्या-क्या होता है मांस? एक तो गुरुदेव ने मांस के भक्षण का वर्णन किया। एक इन्होंने वाद और विवाद के और भी कई प्रकार के भौतिक विज्ञान की कुछ संज्ञाएँ दीं परन्तु मैं तो अपने गुरुदेव से यह कहा करता हूँ कि अभी तो

सर्वस्व संग्राम में बहुत कुछ दूरी है, क्यों दूरी है, क्योंकि पूर्ण लक्षण नहीं आये हैं, जिससे सर्वस्व संसार का संग्राम होगा। पूर्ण लक्षण नहीं हैं। क्योंकि लक्षण उस काल में आते हैं, जब संसार के विनाश का समय आता है भौतिक विज्ञान में, भौतिक विज्ञान में एक यन्त्र किसी ने अग्नेय यन्त्र बनाया परन्तु द्वितीय किसी वैज्ञानिक ने देखो, जल यन्त्र बनाया, जिसे शान्त करने वाला भी यन्त्र हो। जब तक जब देखो, भौतिक विज्ञान से जब संग्राम होता है, कि जब देखो, जल वृष्टि करने वाले भी यन्त्र विराजमान हो जायें, जैसे कोई राष्ट्र आज के संसार की जो गति है, एक व्यक्ति कहता है कि राजाओं से ऐसी सूचना प्राप्त होती है, कि एक यन्त्र जिसने अपने राष्ट्र से त्यागा तो देखो, पृथ्वी मण्डल में जितने राष्ट्र हैं, वह सब समाप्त हो सकते हैं। परन्तु देखो, यहाँ यही नहीं, आज ऐसे यन्त्रों का आविष्कार किया जा रहा है। परन्तु इन यन्त्रों से क्या बनेगा? आज यन्त्र हैं, परन्तु बनेगा, जो बनेगा, जिनको आगे चल करके समय तुम्हें निर्णय निर्धारित कर सकता है। मैं तो केवल वर्तमान की चर्चा करने आया हूँ, और वह समय आयेगा, जो आगे इन वाक्यों को निर्धारित करेगा, कि ये वैज्ञानिक यन्त्र क्या करेंगे और तुम्हारे लिये, परन्तु ये क्या कर रहे हैं।

परन्तु आज देखो, अग्नि के मुख में भी चले जा रहे हैं। प्रत्येक मानव चिन्तित रहता है, जब मुनिवरो! संग्राम का समय आता है निकट तो उस समय प्रत्येक मानव देखो, चिन्तित रहता है। आज वह अपने जीवन का चिन्तित नहीं, वह आज केवल, इस चिन्तन में लगा रहता है कि तू अपने उदर की पूर्ति कैसे करेगा? आज तुझे द्रव्य को किस प्रकार से एकत्रित करना है, और द्रव्य का पुजारी बन जाना है, परमात्मा की महानता को त्याग करके, द्रव्य का पुजारी बन करके, अपने जीवन को उस अग्नि में परणित कर देता है, जहाँ उसे देखो, केवल वह घुटन हो जाता है जीवन नष्ट हो जाता है और इसमें देखो, उसकी मानवता भी समाप्त होती चली जाती है।

धर्म की परिभाषा

आज मैं यह भी उच्चारण करना चाहता था कि देखो, आज धर्म की

मर्यादा, धर्म की वेदी क्या है। मैं यह तो संक्षिप्त में चर्चा करा रहा था कि वह समय दूरी है अभी, जब संसार का संग्राम होगा, वह समय कुछ दूरी है, परन्तु देखो, मैं तो एक चर्चा और करने आया हूँ आत्मिक धर्म कैसे बनेगा, धर्म की परिभाषा क्या है? धर्म किसे कहते हैं? आज यहाँ महात्मा बुद्ध वाले कुछ उच्चारण करते हैं, महात्मा शङ्कर वाले कुछ उच्चारण करते हैं, महात्मा दयानन्द वाले कुछ कहा करते हैं, परन्तु ईसा वाले कुछ कहते हैं, परन्तु देखो, मोहम्मद वाले कुछ कहा करते हैं। मैं वास्तव में अपने हृदय से कहा करता हूँ मैंने गुरुदेव को निर्णय कराया कि मैं मोहम्मद को वास्तविक महात्मा नहीं माना करता। वास्तव में ईसा को, मैं वास्तव में अपने हृदय से उसका स्वागत किया करता हूँ, क्योंकि महात्मा ईसा एक महान् थे, उनके जीवन में एक महान् क्रान्ति थी और अब यह तो आगे समय निर्धारित करेगा कि उसके अनुयायी क्या करेंगे, यह तो मैं उच्चारण नहीं कर सकता। परन्तु देखो, महात्मा बुद्ध और भी नाना प्रकार के मत-मतान्तरों में मनुष्य चला जाता है, अब धर्म क्या वस्तु है? अब देखो, मोहम्मद वाले कहते हैं कि देखो, हमारा जो यह पुस्तकम् है, यह परमात्मा ने हमें दिया, मोहम्मद पर यह आता था, मोहम्मद ने हमें दिया परन्तु यहाँ यह जानना, कि मोहम्मद यदि उस पुस्तक से इत्यं पुस्तकम् से आज मोहम्मद को उनसे दूरी कर देते हैं, तो उससे प्राप्त करो, हमारा कल्याण होगा, वे कहते हैं कि हमारा कल्याण बिना मोहम्मद के नहीं होगा। परन्तु आज हम इसी प्रकार ईसा वालों को कहा करते हैं तो ईसा के मानने वाले कहते हैं ईसा तो अन्तरिक्ष में होता है। आज वे कहते हैं कि वह बड़े आनन्द से राज करता है, वह भगवान् का पुत्र है। आज मैं यह जानना चाहता हूँ, कि भगवान् का पुत्र संसार में कौन नहीं है, आज जिसको तुम अपने मुख में ले जाते हैं, क्या वह भगवान् का पुत्र नहीं है, क्या मानव भगवान् का पुत्र नहीं है, क्या वह भगवान् की पुत्री नहीं है, क्या जितने प्राणी हैं क्या वह भगवान् के पुत्र नहीं है क्या, जिनमें परमात्मा की सहायता मिल रही है, स्वाभाविकता वह दया कर रहा है सब प्राणियों पर, क्या वे भगवान् के पुत्र नहीं हैं क्या, परन्तु देखो, आगे वह कहते हैं यदि उनके पुस्तकम् से हम यदि आज ईसा को दूरी कर देते हैं, तो वह कहते हैं हमारा कल्याण नहीं होगा, परन्तु

और भी मतों में भी यही है। आज महात्मा बुद्ध के विवेचनों में भी कुछ यही चर्चायें है।

परन्तु यदि हमारे से यह प्राप्त किया जाये, यदि तुम महात्मा दयानन्द, महात्मा शङ्कराचार्य, भगवान् कृष्ण, भगवान् राम, वेद व्यास और देखो, महर्षि पतञ्जलि और महर्षि कणाद आदि आचार्यों को इनसे निकास दिया जाये, तो कल्याण हो सकता है? परन्तु मैं कहा करता हूँ, हो सकता है, क्यों नहीं होगा? परन्तु वह क्यों नहीं होगा, वह केवल इसलिए होगा, कि हमारा जो आधार है वह वेद में ज्योति है, प्रकाश है। हम, जो भी प्रकाश का चिन्तन करेगा, चैतन्य स्वरूप का चिन्तन करेगा, उसका ही कल्याण होगा, उसका ही कल्याण होगा। और यदि हम केवल एक व्यक्ति को ले करके चलते हैं, आगे किसी एक व्यक्ति को करते हैं जिसे महान् आत्मा तो कहते हैं, उसको गुरु बना करके चलते हैं, मैं इसका विरोधी नहीं, कि गुरु नहीं होना चाहिये, परन्तु गुरु भी होना चाहिये, पर देखो, मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव हैं, न प्रतीत कितने समय से मुझे शिक्षा देते चले आये हैं, शिक्षा देते ही रहते हैं, इनका कर्त्तव्य ही केवल यह है। मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव हैं, इनसे सब कुछ प्राप्त किया है, परन्तु तुम अपने गुरु से दूरी करके उनके आदेशों को मान करके केवल तुम अपना कल्याण करा सकते हो, तो मैं कहूँगा अवश्य करा सकते हो। परन्तु इनके वाक्यों को आचरण बनाया और हम समाधि होने में इनका एक मन्तव्य और प्रकाश परन्तु यदि परन्तु और जहाँ हमें जाना वह, तो गुड़म्बावाद से भी दूरी का विषय है, उसको विचारों, परन्तु वह गुड़म्बावाद से दूरी का विषय परन्तु इसको निकालो वह कौन-सा है? वह शुद्ध चैतन्य ब्रह्म है, वह शुद्ध चैतन्य ब्रह्म जिसके आङ्गन में जा करके हमें एक आनन्द ही आनन्द प्राप्त होता है, हम नाना प्रकार के विज्ञान से दूरी हो जाते हैं हम इन सबसे दूरी चले जाते हैं।

मेरे गुरुदेव ने कल कई महात्माओं की चर्चा कीं। आज मोहम्मदवादियों से प्राप्त किया जाये, कि यह क्या हो रहा है? आज मोहम्मद ने, उन्होंने भई! देखो, एक शब्द कहा प्रिय और अप्रिय वस्तु को विचार लो, परमात्मा एक है। परन्तु

उनके वाक्यों का इनका प्रत्येक व्यक्ति सम्प्रति नहीं किया करते हैं, परन्तु जहाँ आचरण की विशेषता आती है, मुक्ति का विषय आता है परन्तु वहाँ क्या है? केवल मानव का गुड़म्बावाद, मानव का गुड़म्बावाद में देने के सिवाय और क्या है? परन्तु देखो, इस पर विचारते चले जाओ, ईसा वालों में केवल गुड़म्बावाद में और द्रव्य का पुजारी बनने के अलावा वहाँ क्या है? परन्तु वेद की पोथी ऐसी है जो हमें निर्मलता का प्रकाश देती है हमें देखो, त्याग, मूर्ति और तपस्वी बना करके, हमें देखो, वह ज्योति अपनाने की इच्छा करती है। एक समय वह आता है कि हम ज्योति में लीन हो जाते हैं। परन्तु इसको विचारों, और विचारने से कार्य बनेगा, आज केवल इसी से नहीं बनेगा, कि हम अपने उदर की पूर्ति करते चले जायें। आज केवल हम देखो, अपने उदर में, दूसरों के जीवन को भक्षण करते हैं, इसलिए हमारा जीवन नहीं बनेगा। परन्तु जीवन के बनने का यदि कोई साधन है, **जीवन के बनने का यदि कोई मार्ग है, तो वह मानो एक सदाचार है, उसी से मानवता आती है,** परन्तु उसका विचारने से कार्य बनेगा? परन्तु आज राजा से कहो जा करके, क्या महाराज हम गऊ रक्षा के लिये आप से उद्घाटन चाहते हैं, आप इसका निर्माण कीजिये, तो उस समय कहेगा कि मेरे द्वारा समय नहीं है, समय निर्धारित नहीं है और कहीं ये निर्माण किया जाये कि हम देखो, मुर्गियों को निर्माण कर रहे हैं, वह कहेगा अच्छा चलिए, तो यह क्या है? परन्तु यह विनाश का समय नहीं, तो और क्या है? परन्तु यह विनाश का समय है। यह बेटा! आज का संसार, अग्नि के तट पर विराजमान है। आज यही नहीं, भारत भूमि का ही नहीं सर्वत्र जितना भी ब्रह्माण्ड है, सब पृथ्वी मण्डल, ब्रह्माण्ड इसी प्रकार है परन्तु देखो, यह कैसे जीवन बनेगा?

क्रमशः....

दिनाँक : 21 जून, 1969

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. अन्तरात्मा उस काल में पवित्र होता है जब अपने पिता को जान जाता है।
2. मेधावी बुद्धि उसे कहते हैं, जहाँ सत्यता होती है।
3. यह जो ध्रुव है इसमें अग्नि और जल दोनों की प्रधानता में कहलाये गये है।
4. जिनके सुयोग्य गुरु होते हैं उनका जीवन महानता को प्राप्त होता है।
5. ऊर्ध्वागति ही मानव का जीवन है और ध्रुवा बनना ही मानव की मृत्यु है।
6. वेद ज्ञान सर्वत्र है जैसे प्रभु की प्रतिभा सर्वत्र है, जैसे मानव के शरीर में मन की प्रतिभा सर्वत्र है।
7. वेद का सिद्धान्त कहता है कि सार्वभौम प्रजा में सुख होना चाहिये।
8. परमात्मा ने मानव का विचार स्वतन्त्र बनाया है, कार्य करने में।
9. प्रारब्ध कर्म के साथ-साथ होता है।
10. मानव का प्रारब्ध होता है भोग भोगने का।
11. जो कर्मठ प्राणी होते हैं उनका जो प्रारब्ध होता है व सूक्ष्मता में प्राप्त हो जाता है।
12. धर्म की रक्षा करने के लिये राष्ट्र की उत्पत्ति होती है।
13. प्रकृति और ब्रह्म दोनों ही ऐसे है जिनकी गोद में जाने से मानव की रूढ़ियाँ समाप्त हो जाती है।
14. यौगिकवाद में जाने से रूढ़ी भी नहीं रहती है, अभिमान भी रहता और नम्रता की उत्पत्ति हो जाती है।
15. जो चित्त का अन्तःकरण है वह संस्कारों का केन्द्र है।
16. ब्रह्म की चेतना से मानव की अन्तरात्मा का विकास होता है।
17. योगी हैं जो पर्वतों की कन्दराओं में विराजमान है, अपनी यात्रा कर लेते हैं, शान्त हो जाते हैं।

यौगिक प्रवचन के स्वामित्व व अन्य विवरण का ब्यौरा फार्म नं. 4 (नियम नं. 8)

1.	प्रकाशन स्थान	: दिल्ली
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	मुद्रक	: डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश
	नागरिकता	: भारतीय
	मुद्रक का पता	: डी-33, पँचशील एन्कलेव, नई दिल्ली-110017
4.	प्रकाशक	: डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश
	नागरिकता	: भारतीय
	प्रकाशक का पता	: डी-33, पँचशील एन्कलेव, नई दिल्ली-110017
5.	सम्पादक का नाम	: डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश
	नागरिकता	: भारतीय
	सम्पादक का पता	: डी-33, पँचशील एन्कलेव, नई दिल्ली-110017
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों।	: वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

मैं डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश
प्रकाशक के हस्ताक्षर

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)
सी-38, शिवालिक, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	110.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	110.00
*3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	120.00
*4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	120.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	160.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	100.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	40.00
8.	आत्म-लोक	45.00
*9.	धर्म का मर्म	50.00
10.	शंका-निवारण	40.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्त्व	50.00
12.	आत्मा व योग-साधना	40.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	150.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	150.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	140.00
17.	रामायण के रहस्य	50.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	50.00
19.	महाभारत के रहस्य	35.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	45.00
21.	रावण-इतिहास	65.00
22.	महाराजा-रघु का याग	35.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	40.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	40.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	50.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	40.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	45.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	50.00
29.	याग-मन्जूषा	45.00
30.	आत्म-दर्शन	35.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	40.00
32.	याग और तपस्या	70.00
33.	यागमयी-साधना	45.00
34.	यागमयी-सृष्टि	40.00
35.	याग-चयन	50.00
36.	दिव्य-रामकथा	150.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	50.00
38.	दिव्य-ज्ञान	45.00
39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	140.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	50.00
41.	आत्म-उत्थान	45.00
*42.	तप का महत्त्व	50.00
43.	अध्यात्मवाद	45.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	45.00
45.	वैदिक-प्रभा	40.00
46.	प्रकाश की ओर	40.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	45.00
48.	वैदिक-विज्ञान	40.00
49.	धर्म से जीवन	40.00
50.	आत्मा का भोजन	45.00
51.	साधना	40.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	45.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	45.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	110.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	50.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	110.00
57.	माता मदालसा	60.00
*58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	110.00
*59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	110.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	110.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	110.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	150.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	110.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएँ	60.00
65.	प्रभु-दर्शन	60.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	110.00
*67.	समाज उत्थान का मार्ग	60.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	110.00
*69.	ब्रह्म की ओर	60.00
*70.	ईश्वर मिलन	60.00
*71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	110.00
*72.	यौगिक प्रवचन माला भाग-16	110.00
*73.	नैतिक शिक्षा	60.00
*74.	यौगिक प्रवचन माला भाग-17	110.00
*75.	आत्मिक ज्ञान	60.00
*76.	यौगिक प्रवचन माला भाग-18	120.00
*77.	यज्ञ विज्ञान	100.00
*78.	यौगिक प्रवचन माला भाग-19	120.00
79.	मानव दर्शन	150.00
80.	यौगिक प्रवचन माला भाग-20	160.00
	पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज एवम् कर्मभूमि लाक्षागृह	10.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

पुस्तक प्राप्ति के स्थान

योगनिष्ठ पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की अमृतवाणी का साहित्य सँहिता, कैसेट्स, सी. डी. व डी. वी. डी. के रूप में निम्न स्थानों पर उपलब्ध है–

1. श्री महानन्द संस्कृत महाविद्यालय, लाक्षागृह, बरनावा, जिला–बागपत, (उ.प्र.)। मोबाइल नं. 09897695391
2. सुश्री. नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-3, नई दिल्ली। दूरभाष नं. 011-41721294, मोबाइल नं. 9810887207
3. डॉ. मधुसूदनेश्वर प्रकाश, डी-33 पँचशील एन्क्लेव नई दिल्ली-110017 दूरभाष नं. 011-41030481
4. श्री जितेन्द्र चौधरी, ए-84, मालवीय नगर, नई दिल्ली-110017, मो. नं. 9811707343
5. श्री अनिल त्यागी सी-47 रामप्रस्थ, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)।
6. श्री आशीष त्यागी, सुपुत्र श्री सुशील त्यागी डी-293, रामप्रस्थ, पोस्ट ऑफिस चन्द्रनगर, गाजियाबाद पिन कोड-201011 (उ.प्र.)। फोन नं. 0120-4202763, मो. नं. 9818079943
7. श्री गुरुवचन शास्त्री, मकान नं. 165/30ए, दक्षिण भोपा रोड़, निकट माढ़ी की धर्मशाला, नई मण्डी, मुजफ्फरनगर (उ. प्र.)। मोबाइल नं. 09412888050
8. आचार्य अरविन्द कुमार शास्त्री, मं.न. 209 ग्रीन हाईटस A to Z रूड़की रोड़, मोदीपुरम्, मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09411823200
9. श्री लोमश त्यागी, 106/4 पँचशील कालोनी गढ़ रोड़, मेरठ, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09410452076
10. श्री शमीक त्यागी, 16ए, आलोक कॉलोनी, अल्कापुरी, हापुड़, (उ.प्र.)।
11. श्री संजीव त्यागी, 1107, सैक्टर-3, बल्लभगढ़, फरीदाबाद हरियाणा। मोबाइल नं. 09910589486
12. मैं. हर्ष मेडिकोज, ए-2/31, सैक्टर-110–मार्किट नोएडा, फेस-2, (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9899228860, 9871367937
13. श्री पवन त्यागी सुपुत्र श्री राजाराम त्यागी, मौ. खड़खड़ियान, माता, ग्राम खरखौदा, जिला मेरठ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 7536097171
14. श्री प्रदीप त्यागी सुपुत्र श्री महेश त्यागी, रघुनिवास 138 सर्वोदय कालोनी, मेरठ रोड़, हापुड़ (उ.प्र.) मोबाइल नं. 9758330473
15. डॉ. अशोक कुमार आर्य, आर्यावर्त कालोनी निकट मुरादाबादी गेट, अमरोहा, जिला-जे. पी. नगर (उ.प्र.) मोबाइल नं. 09412139333
16. श्री सतीश भारद्वाज, ग्राम बहेडी, रोहाना मिल, जिला मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)।
17. मैं. विजय कुमार, गोविन्द राम हासानन्द, 4408, नई सड़क, दिल्ली। दूरभाष नं. 011-23977216

मासिक सहयोग

सु. कुमारी नीरू अबरोल, के-3 लाजपत नगर-III नई दिल्ली–	
स्मृति–श्रीमति शान्ति अबरोल व श्री देवराज अबरोल	1001 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री ज्ञानेश द्विवेदी	1000 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	501 रुपये
श्री कर्ण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्रीमती रुचिका तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	501 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
श्री अरुण तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
श्रीमती सुखमणी तुली, के-3 लाजपत नगर-III, नई दिल्ली	251 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
मास्टर कवन्धि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
कुमारी अञ्जलि त्यागी, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सात्विक त्यागी, अँकुर अपार्टमैन्ट, पटपड़ गंज, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
कुमारी प्रीक्षा त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये
मास्टर कबीर, कुमारी रिधानी मल्हौत्रा, ब्रज विहार, गाजियाबाद	101 रुपये
कुमारी सृष्टा, मास्टर अव्युक्त, पश्चिम एन्कलेव, नई दिल्ली	101 रुपये

मासिक सहयोग का आह्वान

आप सभी से समिति विनम्र भाव से प्रार्थना करती है कि मासिक सहयोग की राशि समय पर प्रेषित करने का सहयोग करें जिससे प्रकाशन निरन्तर ऊर्ध्वागति को प्राप्त होता रहें। **वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)**

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद-गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

आओ, आज हम उच्चारण करते चले जाएँ, कि वह देव की जो अनुपम देन है, वह जो अनुपम प्रकाश है उसमें नाना प्रकार का ज्ञान और विज्ञान आता है और नाना प्रकार की प्रतिभा उसमें हमें विराजमान होती प्रतीत होती है। आज हम उस महान् देव, वेदवाणी में ही, प्रभु की आनन्दमयी जो देन है उसका अनुवाद करते हुए, वेद का ऋषि कहता है, आचार्य कहता है हे महाप्रभु! अकृते! तू वास्तव में हमारा कल्याण करने वाला है, जीवन को उदबुद्ध करने वाला है। तेरी ही महती, अनुपम कृपा से यह हमारा जीवन उदबुद्ध हो रहा है।

पूज्यपाद-गुरुदेव

वर्ष 50 : अंक : 585
मार्च 2022

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2021-2023
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-3-2022
Published on 5th day of the same month

वर्ष 50 : अंक : 585
मार्च 2022

मूल्यः
पन्द्रह रुपये

RNI No. 23889/72
Delhi Postal R.No. DL (S)-20/3220/2021-2023
Licence to Post without prepayment
U (SE)-70/2018-2020
POSTED AT KRISHNA NAGAR HP.O. N.D. ON 10/11-3-2022
Published on 5th day of the same month